



जब लोहे की रॉड गरम हो जाती है आप उसे किसी भी आकार में ढाल सकते हैं..! कभी भी अपना मिजाज खराब मत करिए नहीं तो लोग आपको उसी तरह ढाल देंगे जैसा वे चाहते हैं।
-ब्रह्माकुमारी शिवानी

मूल्य
₹ 3/-

जिद...सच की

● वर्ष: 12 ● अंक 232 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 30 सितम्बर, 2026

श्री चरणी ने 817 रेटिंग अंक हासिल... 7 बिहार में सियासी रार, विपक्ष... 3 सत्ता के अहंकार में सनातन समाज... 2

पूछ रही जनता, क्या आपकी नजर में हम सब बेवकूफ हैं राघव जी

» 30 दिन का रिचार्ज आया राघव ने खुद को मोबाइल का मसीहा बताया

» सोशल मीडिया पर सवाल 30 दिन के नये रिचार्ज में क्या दाम कम हुए

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी से बीजेपी में गये राघव चड्ढा इस समय ट्रोलर्स के निशाने पर हैं और लोग उनसे तरह तरह के सवाल पूछ रहे हैं। गौरतलब है कि संसद में एक प्रस्ताव रखते हुए उन्होंने मोबाइल कंपनियों से 30 दिनों का टैरिफ प्लान लांच करने की मांग रखी थी। हालांकि इस तरह का प्लान सभी कंपनियों का पहले से मौजूद था। उनका तर्क 28 दिनों वाला प्लान 30 दिनों के करने का था। क्योंकि 28 दिनों वाला चार्ज यूजर्स को साल में 13 बार कराना पड़ता है।

अब कहा जा रहा है कि रिचार्ज 28 दिन से 30 दिन को हो गया है एलान के बाद सियासत में ऐसा जश्न मचा जैसे टेलीकॉम कंपनियों ने अपना मुनाफा छोड़कर राघव चड्ढा के चरणों में रख दिया हो। राघव चड्ढा इसे अपनी मांग की जीत बता रहे हैं। दावा यह भी किया जा रहा है कि कि उनकी आवाज उठी तो मोबाइल कंपनियों ने टैरिफ घटा दिए।

रिचार्ज पर राघव की क्रेडिट पॉलिटिक्स

मोबाइल रिचार्ज के 28 दिन वाले रिचार्ज पर संसद में आवाज उठाने के बाद अब राघव चड्ढा ने इसका क्रेडिट भी अपने नाम करने की कोशिश की है। बदलाव सामने आते ही राघव चड्ढा ने सोशल मीडिया पर वीडियो और पोस्ट जारी कर इसे अपनी

संसद में उठाई गई मांग से जोड़ दिया। उनके संदेश का सार है कि मुददा संसद में उठाया सरकार और ट्राई अब कदम उठाया और उपभोक्ताओं को फायदा मिलेगा। यानी रिचार्ज के नियम बदले तो राजनीतिक बहस में एक नया सवाल भी

खड़ा हो गया फायदा उपभोक्ता का लेकिन क्रेडिट किसका। हालांकि सोशल मीडिया पर राघव चड्ढा के वीडियो अपलोड करने के बाद उन्हें ट्रोल करना भी शुरू हो चुका है। मीडिया भी उन्हें निशाने पर ले रहा है और पूछ रहा है? कि मार्केट में पहले से

30 दिनों के रिचार्ज कूपन उपलब्ध थे इसमें नया क्या है। लोगों का कहना है कि क्या दाम कम हुए। कंपनियों ने यदि 30 दिन के रिचार्ज का नया कूपन लांच किया है तो उसके रेट भी तो इन्क्रीज कर दिये हैं।

तो सवाल यह नहीं कि 30 दिन का प्लान आया या नहीं। सवाल यह है कि 30 दिन का प्लान आते ही राघव चड्ढा के खाते में इतनी बड़ी राजनीतिक उपलब्धि आखिर किसने और कैसे जमा कर दी।

28 दिन के प्लान की जगह 30 दिन का प्लान हो गया ठीक है!



ट्राई का 13वां संशोधन

ट्राई का यह 13वां संशोधन है करीब 14 साल के दौरान मोबाइल उपभोक्ताओं से जुड़े इस मूल विनियमन में 13 बार बदलाव किए जा चुके हैं। ट्राई ने वर्ष 2012 में उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा के लिए इन विनियमों को लागू किया था। इसके बाद उसी वर्ष नियमों में लगातार बदलाव हुए। 12 जनवरी को पहला, 21 फरवरी को दूसरा, 9 मार्च को तीसरा और 22 अक्टूबर को चौथा संशोधन किया

गया। इसके बाद 27 नवंबर 2012 को पांचवां संशोधन हुआ। इन बदलावों के जरिए दूरसंचार कंपनियों की शुल्क और वाउचर संबंधी व्यवस्थाओं को उपभोक्ताओं के लिए अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया गया। 23 दिसंबर 2024 को 12वां संशोधन किया गया। इस बदलाव में केवल आवाज और संदेश वाली सेवाओं के लिए अलग विशेष टैरिफ वाउचर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई। विशेष टैरिफ और संयुक्त वाउचर की अधिकतम वैधता 90 दिन से बढ़ाकर

365 दिन की गई। साथ ही वाउचर की रंग आधारित पहचान की अनिवार्यता को भी समाप्त किया गया। अब 22 सितंबर 2026 को 13वां संशोधन किया गया है। इसके तहत उपभोक्ताओं के लिए केवल आवाज और संदेश वाली सेवाओं के विकल्पों को लेकर प्रावधान किए गए हैं। साथ ही कम से कम एक ऐसा वाउचर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है जिसकी वैधता 30 दिन हो और जिसे हर महीने उसी तारीख को दोबारा शुरू किया जा सके।

अब जरा मोबाइल निकालिए कैलकुलेटर खोलिए और इस दावे का रिचार्ज करिए

क्योंकि 30 दिन की वैलिडिटी और टैरिफ घटने की कहानी दो अलग चीजें हैं। ट्राई की अपनी जानकारी साफ कहती है कि मोबाइल टैरिफ वह तय नहीं करता टेलीकॉम कंपनियां बाजार की परिस्थितियों के हिसाब से अपने प्लान और शुल्क तय कर सकती हैं। ट्राई यह भी कहता है कि हर सेवा प्रदाता 30 दिन का कम से कम एक प्लान और हर महीने उसी तारीख को रिन्यू होने वाला प्लान देता है। तो सवाल यह नहीं कि 30 दिन का प्लान आया

या नहीं। सवाल यह है कि 30 दिन का प्लान आते ही राघव चड्ढा के खाते में इतनी बड़ी राजनीतिक उपलब्धि आखिर किसने और कैसे जमा कर दी। 28 दिन के प्लान की जगह 30 दिन का प्लान हो गया ठीक है। ग्राहक के लिए साल में रिचार्ज की गिनती घट सकती है यह भी ठीक है। लेकिन इसे मोबाइल कंपनियों द्वारा टैरिफ घटाने की कहानी बनाना है तो जेब का हिसाब भी दिखाइए। क्योंकि जनता को भाषण का बैलेंस नहीं चाहिए साहब उसे रिचार्ज की पर्ची पर बची रकम दिखाई देती है। और यहीं राघव चड्ढा के दावे का असली पोस्टमार्टम शुरू होता है। 30 दिन का प्लान किसने दिया किस नियम के तहत दिया कीमत कितनी बढ़ी और ग्राहक की जेब में वास्तव में कितना बचा।

सत्ता के अहंकार में सनातन समाज की भावनाओं का अपमान कर रही है भाजपा : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- शंकराचार्य के अपमान पर मिलेगी सजा

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का भाजपा पर प्रहार जारी है। सपा प्रमुख ने शंकराचार्य के प्रति कथित आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि सत्ता के अहंकार में सनातन समाज की भावनाओं का अपमान किया गया। अखिलेश ने कहा कि शंकराचार्य के साथ हुए व्यवहार की राजनीतिक कीमत भाजपा को चुकानी पड़ेगी।

सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने



कहा कि मंच से लाखों-करोड़ों सनातनियों की आस्था के प्रतीक शंकराचार्य के प्रति बेहद आपत्तिजनक शब्द का इस्तेमाल करके भाजपा वालों ने दिखा दिया है कि सत्ता के अहंकार ने किस तरह उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है। उन्होंने जारी बयान में कहा कि सनातन समाज आज से पहले इतना अधिक अपमानित कभी नहीं हुआ। अखिलेश ने कहा कि आज सनातन समाज का हर विचारशील व्यक्ति अपमान के इस घूट को मजबूर होकर पीने व सरेआम बेइज्जत किए जाने से बेहद दुखी है। वे लोग भी लज्जित हैं, जिन्होंने आज तक भाजपा का समर्थन करने के लिए कोई कुतर्क तक नहीं छोड़ा था। उन्होंने कहा कि अब यही समाज अपने सम्मान की रक्षा के लिए सत्ताधीश के पद के मद को चूर-चूर कर देगा। अब तो इनके संगी-साथी भी इस शाब्दिक प्रहार से किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं बचे हैं। ये हारने वाले हैं, इसलिए जाते-जाते ये किसी और की संभावना को भी हमेशा

कांग्रेस को बड़ा दिल दिखाना होगा मिलकर लड़ेंगे चुनाव : बर्क



आगामी उत्तर प्रदेश चुनाव के लिए सपा-कांग्रेस गठबंधन पर सपा सांसद जिया-उर-रहमान बर्क ने बयान दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कितनी सीटें मांगेगी, यह उनका फैसला है। बर्क ने स्पष्ट किया कि 50, 100, 150 या 200 सीटें मांगना एक बात है। लेकिन अंतिम समझौता ही मायने रखता है। उन्होंने इसमें कोई बड़ी बाधा नहीं देखी। सपा नेतृत्व इस मामले को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाएगा। बर्क ने उम्मीद जताई कि कोई दशर नहीं होगी। एक समझौता हो जाएगा और दोनों दल मिलकर चुनाव लड़ेंगे। भाजपा को हथाने और सरकार बनाने के लिए कांग्रेस को बड़ा दिल दिखाना होगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अखिलेश यादव और राहुल गांधी इस मामले को सुलझाने के लिए एक साथ आएंगे। ईश्वर ने चाहे तो वे संयुक्त रूप से चुनाव लड़ेंगे। सपा के शीर्ष राजनीतिकारों का कहना है कि सिर्फ कांग्रेस या भाजपा के बीच ही सीटों की मांग करना गठबंधन के हित में नहीं है। 30 सितंबर की बैठक में यह बात मजबूती से उदाई जाएगी कि गठबंधन का मुख्य उद्देश्य हर हाल में चुनाव जीतना है। ऐसे में जिस सीट पर कांग्रेस अपना दावा ठोकेगी, उस पर उसके उम्मीदवार के जमीनी जनाधार, क्षेत्रीय समीकरण और जीतने की क्षमता पर भी बात होगी।

के लिए खत्म कर रहे हैं। सपा अध्यक्ष ने भाजपा सरकार में शंकराचार्य का लगातार अपमान हो रहा है। शंकराचार्य के साथ जो व्यवहार हुआ है, इसकी सजा भारतीय जनता पार्टी को मिलेगी।

यूपी में चुनाव हैं इसलिए तोड़ी सहारनपुर की मस्जिद : इकरा

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी की सांसद इकरा हसन ने देश के अलग-अलग हिस्सों में मस्जिदों पर हो रही कार्रवाई को लेकर भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए आज सिर्फ एक मजहब को ही टारगेट किया जा रहा है। यूपी में चुनाव हैं इसलिए सहारनपुर की मस्जिद को तोड़ा गया है। दिल्ली के जंतर मंतर पर मुस्लिम संगठनों द्वारा देश के अलग-अलग हिस्सों में मस्जिदों के खिलाफ हो रही कार्रवाई के विरोध में किया गया था।

इस प्रदर्शन में कैराना से सपा सांसद इकरा हसन, सैंभल से सांसद जियाउर रहमान बर्क और रामपुर सांसद मोहिबुल्लाह नदवी भी शामिल हुए। इस प्रदर्शन में जबरदस्त धक्का-मुक्की देखने को मिली। इकरा हसन ने इस दौरान बीजेपी और यूपी सरकार पर जमकर हमला किया। उन्होंने कहा कि जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करना सभी का अधिकार है। क्या इस देश का मुसलमान अपनी पीड़ा भी नहीं आकर रो सकता है। हम लगातार इनके अपराधों का और इस सरकार की जो मंशा है उसका विरोध करेंगे। इनकी मंशा



सिर्फ और सिर्फ चुनाव पर है। सपा सांसद ने कहा कि उत्तर प्रदेश के चुनाव हैं इसलिए सहारनपुर की मस्जिद को तोड़ा गया। वरना और कोई कानूनी अधिकार नहीं था इनके पास मस्जिद को तोड़ने का। जिस तरीके से नाइसाफी सहारनपुर में हुई, सैंभल में हुई और उज्जैन में कर रहे हैं। दिल्ली में भी हुआ, फरीदाबाद में भी हुआ, क्या इस देश में सिर्फ मस्जिद टूटने का ही आदेश जारी रहेगा। हम किसी मजहब के खिलाफ नहीं हैं, हम अपने धर्म की हिफाजत करने के लिए आज सड़क पर उतरे हैं और ये लड़ाई मजबूती से लड़ेंगे। क्या इस देश में संविधान में कोई कदर नहीं रही है। हम किसी मजहब के खिलाफ नहीं हैं लेकिन सिर्फ एक मजहब को अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए टारगेट करना गैरकानूनी, असंवैधानिक है।

झूठ के दम पर सत्ता में आई आप हमें नसीहत न दे : राजेंद्र

» संजय सिंह के बयान पर यूपी कांग्रेस प्रभारी का तीखा पलटवार

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) के गठबंधन और सीट-शेयरिंग को लेकर आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सांसद संजय सिंह की टिप्पणी पर कांग्रेस ने जोरदार पलटवार किया है। कांग्रेस नेता राजेंद्र पाल गौतम ने न केवल संजय सिंह के आरोपों को खारिज किया, बल्कि सामाजिक न्याय के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी के पूरे रिकॉर्ड पर ही सवाल खड़े कर दिए।

गौतम ने सामाजिक न्याय के मामले में झूठ के रिकॉर्ड पर सवाल उठाए और कहा कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी दोनों इंडिया ब्लाक का हिस्सा हैं और उन्हें उत्तर प्रदेश में भाजपा से लड़ने के लिए मिलकर काम करना होगा। संजय सिंह के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए राजेंद्र पाल गौतम ने कहा, सबसे पहले, संजय सिंह को इसका जवाब देना चाहिए। आम आदमी पार्टी ने अब तक 14 राज्यसभा सांसद भेजे हैं। उन्होंने कितने

वाराणसी में मोदी चुनाव हार रहे थे तो जिताया किसने बताए भाजपा

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी मुख्यालय, नेहरू भवन, 10 माल एवेन्यू में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता अमर्य दुबे ने विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर अपनी बात रखी। प्रेस वार्ता के दौरान कांग्रेस नेताओं ने मोदी चुनाव हार रहे थे, जिताया किसने? सवाल उठाते हुए चुनावी प्रक्रिया और उससे जुड़े मुद्दों पर सवाल खड़े किए। नेताओं ने अपने पक्ष में विभिन्न राजनीतिक दावे और तर्क भी रखे। प्रेस वार्ता में कांग्रेस पदाधिकारियों ने चुनावी प्रक्रिया से जुड़े मुद्दों पर पार्टी का पक्ष सांगने रखा।

एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक सांसद भेजे हैं? जो पार्टी सामाजिक न्याय में विश्वास नहीं रखती, जो पार्टी झूठ के दम पर सत्ता में आई, क्या वे आज हमें बताएंगे कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं? गौतम ने आगे कहा कि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस दोनों इंडिया ब्लाक का हिस्सा हैं और दोनों पार्टियों को उत्तर प्रदेश चुनाव मिलकर लड़ना और जीतना है। उन्होंने कहा, हमारा शीर्ष नेतृत्व इस बात पर चर्चा करेगा कि गठबंधन कैसे काम करेगा, कितनी सीटें होंगी और सीट-शेयरिंग का फॉर्मूला क्या होगा। हम सीटों में सम्मानजनक हिस्सेदारी

की मांग कर रहे हैं। अगर वे इसे नहीं समझते हैं, तो हम इसमें कुछ नहीं कर सकते। आम आदमी पार्टी क्या करती है, यह उन्हें तय करना है। आज अहम मुद्दा देश के लोकतंत्र और संविधान को बचाना है। आप राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने कहा था कि उनकी पार्टी इंडिया ब्लाक की बैठक में शामिल नहीं होगी। इसके बजाय, उन्होंने कहा कि पार्टी संसद में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव का समर्थन करेगी। गठबंधन की बैठक के बारे में बात करते हुए सिंह ने कहा, आम आदमी पार्टी ने पहले ही साफ कर दिया है कि हम गठबंधन का हिस्सा नहीं हैं। इसलिए, ऐसी बैठक में शामिल होने का कोई मतलब नहीं है। दूसरी बात, जहाँ तक महाभियोग की बात है, हमने ज्ञानेश कुमार के खिलाफ पहले ही हस्ताक्षर कर दिए हैं। इसलिए, अगर संसद में ज्ञानेश कुमार के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाया जाता है और कार्रवाई की जाती है, तो हम इस मुद्दे पर लड़ेंगे। हम सभी विपक्षी दलों के साथ मिलकर लड़ेंगे। यह बात शुरू से ही बिल्कुल साफ रही है।

रिटायर्ड अधिकारी ने आतंकी कसाब संग शेयर की राहुल गांधी की फोटो

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तस्वीर मुंबई आतंकी हमलों के दोषी आतंकी अजमल कसाब से साथ शेयर किए जाने के खिलाफ कांग्रेस सेवा दल ने एक रिटायर्ड भारतीय वायुसेना अधिकारी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। ये साइबर शिकायत कांग्रेस ने रिटायर्ड अधिकारी फ्लाइट लेफ्टिनेंट अनूप वर्मा के खिलाफ दर्ज कराई है।

रिटायर्ड अफसर पर आतंकी कसाब के साथ राहुल गांधी की फोटो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर उनकी तुलना आतंकी से करने का आरोप है। रिटायर्ड अधिकारी अनूप ने एक्स पर एक कोलाज शेयर किया था, जिसमें राहुल गांधी और कसाब एक नाथ नजर आ रहे थे। पोस्ट के साथ उन्होंने लिखा था कि बाईं ओर मौजूद शख्स देश के लिए कहीं ज्यादा खतरनाक है। उनके इस पोस्ट पर राजनीतिक विवाद शुरू हो



गया। कांग्रेस सेवा दल के लीगल सेल ने इस मामले में साइबर शिकायत दर्ज कराते हुए कहा कि वह इसे उचित कानूनी माध्यमों से आगे बढ़ाएगी। पार्टी के सेवा दल लीगल सेल ने कहा कि पार्टी और उसके नेताओं या सदस्यों को निशाना बनाने वाली किसी भी दुर्भावनापूर्ण या गैर-कानूनी हरकत को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।



भाजपा व एआईडीयूएफ में है गुप्त गठबंधन : गौरव गोगोई बोले असम कांग्रेस अध्यक्ष- मुश्किल में पड़ते ही 108 एम्बुलेंस की तरह अजमल को बुलाते हैं हिमंत

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। असम की राजनीति में चुनावी सरगर्मियों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। कांग्रेस की असम इकाई के अध्यक्ष गौरव गोगोई ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट - एआईडीयूएफ के बीच 'गुप्त तालमेल' का गंभीर आरोप लगाया।

कोलमौबाड़ी में कांग्रेस उम्मीदवार शिवमणि बोरा के समर्थन में एक जनसभा को संबोधित करते हुए गोगोई ने मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा और दृष्टक्ष प्रमुख बदरुद्दीन अजमल पर तीखे राजनीतिक बाण चलाए।



कांग्रेस की असम इकाई के अध्यक्ष गौरव गोगोई ने कहा कि मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा जब भी मुश्किल में पड़ते हैं तो 108 एंबुलेंस सेवा की तरह एआईडीयूएफ प्रमुख बदरुद्दीन अजमल को बुलाते हैं। कोलमौबाड़ी में कांग्रेस उम्मीदवार शिवमणि बोरा के समर्थन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए गोगोई ने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईडीयूएफ) गरीब लोगों का इस्तेमाल करने के लिए साथ मिलकर काम कर रहे हैं, जबकि अपनी संपत्ति मुंबई और दुबई में बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा, "जब भी हिमंत विश्व शर्मा खुद को मुश्किल में पाते हैं, वह 108 एंबुलेंस सेवा की तरह बदरुद्दीन अजमल

को बुलाते हैं। गोगोई ने कहा कि 2024 में धुबरी की जनता ने अजमल को करीब 10 लाख मतों से हराया था और याद दिलाया कि 2016 में कांग्रेस विधायक दल के नेता वाजेद अली चौधरी ने भी उन्हें दक्षिण सलमारा सीट से हराया था।

उन्होंने अजमल के उपचुनाव लड़ने का जिक्र करते हुए कहा, "अब हिमंत विश्व शर्मा एआईडीयूएफ के पंकर हुए टायर में हवा भरने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने भाजपा उम्मीदवार देवाशीष शर्मा पर भी निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि जिला आयुक्त के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अवैध रूप से निर्दोष लोगों को बांग्लादेश भेजा और बेदखली अभियानों के जरिए लोगों को परेशान किया।

बिहार में सियासी रार, विपक्ष के साथ अपनों से भी तकरार

विपक्ष ने कड़े किए तेवर, संबंधों पर पड़ेगा असर

» राज्य के कानून-व्यवस्था को लेकर लोजपा रामबिलास मुखर

» जदयू बोली राज्य की कानून-व्यवस्था से कोई समझौता नहीं

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में जिस तरह कई जिलों में छेड़खानी की घटनाएं सोशल मीडिया पर आ रही हैं उससे एनडीए सरकार व सीएम सम्राट घिरते जा रहे हैं। विपक्ष तो आक्रामक है ही साथ उसके अपने सहयोगी भी उन पर सवाल दाग रहे हैं। इन सबके बीच चुनाव आयोग वाले मुद्दे पर भी सहयोगी दल मुखर है। चिराग पासवान, उपेन्द्र कुशवाहा से लेकर जदयू तक आयोग को फटकार रहे हैं।

उधर चिराग पासवान के बयान ने इस पूरे मामले का राजनीतिक तापमान बढ़ा दिया है। चिराग ने विपक्ष के आरोपों को सही ठहराने के बजाय मुद्दे की जड़ पर हाथ रखा है, यानी उन्होंने जनता के भरोसे की बात कही है। उनका तर्क है कि विपक्ष राजनीति करेगा, यह उसका काम है। अब तक चुनाव आयोग पर सवाल उठाने वालों में विपक्ष सबसे आगे था, लेकिन अब सत्ता पक्ष के भीतर से भी चुनाव आयोग को लेकर आवाज उठने लगी है। यही इस पूरे विवाद का सबसे अहम पहलू है। केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के प्रमुख सहयोगी चिराग पासवान ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार से साफ कहा है कि अगर चुनाव प्रक्रिया को लेकर लोगों के मन में सवाल उठ रहे हैं तो चुनाव आयोग को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। उनका कहना है कि आयोग को सफाई राहुल गांधी को नहीं, बल्कि देश की जनता को देनी चाहिए। हम आपको बता दें कि मामला इसलिए गरम है क्योंकि चुनाव आयोग के भीतर ही मतभेदों की खबर सामने आई है। द इंडियन एक्सप्रेस की पड़ताल के मुताबिक तीन सदस्यीय चुनाव आयोग में चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने पिछले दस महीनों में कम से कम 14 मौकों पर मुख्य चुनाव आयुक्त के नेतृत्व में लिए जा रहे फैसलों और निर्देशों पर औपचारिक आपत्तियां दर्ज कीं। ये आपत्तियां मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े कामकाज, प्रपत्रों में बदलाव, आंकड़ों और मतदाता सूची से नाम हटाने जैसे मुद्दों को लेकर थीं। वहीं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के बयान के बाद आरजेडी उनसे इस्तीफा मांग रही है। वहीं जेडीयू का कहना है कि चिराग पासवान ने अपराध पर अपनी चिंता जाहिर की है। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रमुख और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने यह



कहानी विपक्ष बनाम चुनाव आयोग की सीधी लड़ाई से आगे निकली अब यहां से कहानी विपक्ष बनाम चुनाव आयोग की सीधी लड़ाई से आगे निकल जाती है। विपक्ष पहले से आरोप लगा रहा है कि चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल हैं। राहुल गांधी ने मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग तक कर दी है। कांग्रेस सहित विपक्षी दल संसद में भी मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की प्रक्रिया शुरू करने की तैयारी में हैं।

और सत्ता पर हमला भी करेंगे... दोनों चीजें नहीं चल सकती हैं : एजाज अहमद



आरजेडी की ओर से भी रिएक्शन आया है। आरजेडी के प्रवक्ता एजाज अहमद ने केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के बयान पर कहा कि सत्ता के साथ भी रहेंगे और मजा भी लेंगे, कहीं न कहीं अपनी छवि बचाने के लिए और बिहार में जिस तरह से परिस्थिति का निर्माण हुआ है उससे अपने आप को अलग करने के लिए जिस तरह का आप दृष्टिकोण पेश कर रहे हैं इसको बिहार की जनता भी समझ रही है। आप गुड़ खाएंगे और गुलगुले से परहेज करेंगे? एजाज अहमद ने कहा, सत्ता का मजा भी लेंगे और सत्ता पर हमला भी करेंगे... दोनों चीजें नहीं चल सकती हैं। अगर आपको लगता है कि बिहार में बेटियां सुरक्षित नहीं हैं, लॉ एंड ऑर्डर ठीक नहीं है, बिहार में सरकार का इकबाल समाप्त हो गया है तो आप सत्ता से चिपके रहने की राजनीति को समाप्त कीजिए। स्पष्ट रूप से सत्ता से बाहर आइए और संदेश दीजिए कि स्वार्थ के लिए राजनीति नहीं करते हैं।

बयान दिया है कि बिहार में पुलिस-प्रशासन निकम्मा हो चुका है। उन्हें दुख है कि वे इस सरकार का समर्थन कर रहे हैं। उनके बयान के बाद सियासत शुरू हो गई है। आरजेडी इस्तीफा देने के लिए कह रही है इस बीच जेडीयू की ओर से पहली प्रतिक्रिया आई है।

बिहार में अपराधियों के लिए कोई जगह नहीं है. यहां पर अगर अपराध करोगे तो सरकार माकूल जवाब भी देगी : चंदन सिंह

जेडीयू के प्रवक्ता चंदन सिंह ने कहा कि बिहार में पिछले दो दशक से कानून का राज है। नीतीश कुमार ने क्राइम से कभी समझौता नहीं किया। उन्हीं की विरासत को सम्राट चौधरी जी संभाल रहे हैं। जमुई

की जो दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी उसमें प्रशासन ने अपराधियों को सख्त संदेश दे दिया है। बिहार में अपराधियों के लिए



कोई जगह नहीं है। यहां पर अगर अपराध करोगे तो सरकार माकूल जवाब भी देगी। केंद्रीय मंत्री के बयान पर चंदन

सिंह ने कहा, चिराग पासवान ने अपराध पर अपनी चिंता जाहिर की है। हम सम्मान करते हैं, लेकिन बिहार में अपराध के लिए कोई जगह नहीं है। अपराधियों को प्रशासन के द्वारा माकूल जवाब दिया जाएगा।

भाजपा ने आरोपों को खारिज किया

उधर, सत्ता पक्ष की तरफ से भाजपा ने इन आरोपों को खारिज किया है। भाजपा ने कहा है कि आयोग के भीतर अलग-अलग राय होना किसी संस्था के कामकाज का सामान्य हिस्सा है और अतिम फैसले सर्वसम्मति से लिए गए। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने भी इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट पर सवाल उठाते हुए कहा कि

उसमें किसी चुनाव आयुक्त का प्रत्यक्ष या अनौपचारिक बयान नहीं है। दूसरी तरफ चुनाव आयोग का कहना है कि आंतरिक टिप्पणियां, तकनीकी सुझाव और आपत्तियां किसी बहुसदस्यीय संस्था की सामान्य निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा हैं और विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े अतिम फैसले सर्वसम्मति से लिए गए हैं।

कंप्यूजन है, EC स्पष्टीकरण दे

एसआईआर और मुख्य चुनाव आयुक्त को लेकर जारी विवाद के बीच अब एनडीए में सवाल उठने लगे हैं। चिराग पासवान के बाद उपेंद्र कुशवाहा ने कंप्यूजन दूर करने की मांग की है। अपने एक्स पोस्ट में उपेंद्र कुशवाहा ने कहा कि एसआईआर से संबंधित विवाद पर जनता में काफी उलझन की स्थिति पैदा हो गई है। विषय को एड्रेस करने की जरूरत है। कंप्यूजन दूर करने के लिए चुनाव आयोग के द्वारा अविलंब सही स्थिति पर स्पष्टीकरण आना चाहिए। चिराग



पासवान और उपेंद्र कुशवाहा दोनों ही बिहार में बीजेपी ने नेतृत्व वाली सरकार के सहयोगी हैं। इससे पहले चिराग पासवान ने कहा कि चुनाव आयोग को जनता के मन में उत्पन्न हुई शंकाओं को दूर करना चाहिए। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष ने कहा कि वह सरकार का हिस्सा होने के नाते किसी संवैधानिक संस्था का बचाव नहीं करना चाहते और विपक्षी नेताओं, विशेषकर राहुल गांधी के आरोपों को वह अधिक महत्व नहीं देते।

आयोग की विश्वसनीयता पर सवाल

देखा जाये तो राजनीति में यही वह मोड़ होता है जहां बात आरोप-प्रत्यारोप से निकलकर भरोसे के सवाल पर आ जाती है। चुनाव जीतने-हारने का फैसला जनता करती है, लेकिन चुनाव कराने वाली संस्था की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े होने लगे तो उसका असर किसी एक दल की राजनीति तक सीमित नहीं रहता। खासकर तब, जब आयोग के भीतर दर्ज आपत्तियों की संख्या भी सामने आ चुकी हो और बाहर विपक्ष

लगातार सवाल उठा रहा हो। ऊपर से चुनाव आयोग की ओर से मुख्य चुनाव आयुक्त के प्रस्तावित युवा मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों के स्थगित होने की खबर भी आई है। आयोग ने इसे कार्यक्रमों की तारीखों में होने वाले सामान्य बदलाव से जोड़ा है, जबकि सूत्रों के मुताबिक ये कार्यक्रम अनिश्चितकाल के लिए टाल दिए गए हैं। यानी फिलहाल सियासत की गंद चुनाव आयोग के पाले में है। विपक्ष सवाल की

बौछार कर रहा है, भाजपा उसका बचाव कर रही है, लेकिन अब सहयोगी दल की तरफ से भी यही कहा जा रहा है कि सवाल उठ रहे हैं तो जवाब साफ-साफ दिया जाए। यही इस विवाद का सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश है। मामला अब सिर्फ यह नहीं रह गया कि कौन किस पर आरोप लगा रहा है; असली सवाल यह है कि चुनावी व्यवस्था को लेकर जनता के मन में उठ रहे संदेहों का जवाब कौन और किस तरह देगा।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

प्रशासन के संवेदनहीन रवैये से कब मिलेगी निजात

66

नवोदय विद्यालय के प्रिंसिपल पर आरोप है कि हॉस्टल में घटिया भोजन मिलने की शिकायत पर एक छात्र की बेरहमी से पिटाई कर दी गई। खराब भोजन और छात्र की पिटाई से उपजे आक्रोश के चलते विद्यार्थियों को यह कदम उठाने को मजबूर होना पड़ा।

एक ऐसी खबर जिसने सिस्टम पर सवाल खड़ा दिया है। जहां दिल्ली अवैध हॉस्टल के गिरने से कई छात्र जान गांव बैठे थे वैसे मिड डे मील जैसी योजनाओं में भोजन की गुणवत्ता में खामी प्रशासन के संवेदनहीन होने की बात को प्रमाणित करता है। इसी तरह घटिया भोजन की शिकायत पर गुना (मध्य प्रदेश) के बजरंगगढ़ स्थित नवोदय विद्यालय के हॉस्टल में रह रहे विद्यार्थियों का स्कूल प्रबंधन के खिलाफ गुस्सा इस कदर पहुंच जा एक एक दो नहीं, बल्कि 360 छात्र खुद को हॉस्टल में बंदकर सामूहिक आत्महत्या की धमकी जैसा कदम उठा लें तो शिक्षा केंद्रों में बदइंतजामी पर चिंता होना स्वाभाविक है। नवोदय विद्यालय के प्रिंसिपल पर आरोप है कि हॉस्टल में घटिया भोजन मिलने की शिकायत पर एक छात्र की बेरहमी से पिटाई कर दी गई। खराब भोजन और छात्र की पिटाई से उपजे आक्रोश के चलते विद्यार्थियों को यह कदम उठाने को मजबूर होना पड़ा। समस्या के चरम पर पहुंचने पर ऐसा कदम उठाने की नौबत आती है। नवोदय विद्यालय की यह घटना तो बानगी है।

ऐसा आक्रोश देशभर में निजी व सरकारी शिक्षण संस्थाओं से जुड़े छात्रावासों की व्यवस्थाओं पर भी सवाल उठाने वाला है। चिंता की बात यह है कि माता-पिता अपने बच्चों का हॉस्टल में दाखिला इस उम्मीद से कराते हैं कि उन्हें यहां पर घर जैसा माहौल मिलेगा। यह प्रकरण तो नवोदय विद्यालय का है जहां अपेक्षाकृत बेहतर व्यवस्थाओं की उम्मीद की जानी चाहिए। लेकिन आमतौर पर यह देखने में आता है कि स्कूल ही नहीं, बल्कि उच्च शिक्षण संस्थानों में भी हॉस्टल के नाम पर मनमानी फीस वसूलने के बावजूद इनमें रहने वालों को उसके अनुरूप सुविधाओं से वंचित रखा जाता है। बच्चों को भोजन ही गुणवत्ता वाला नहीं मिले तो फिर सेहत से जुड़ी समस्याएं होना स्वाभाविक है। घर से दूर रह रहे बच्चों की मजबूरी यह रहती है कि वे कैरियर के डर से अव्यवस्थाओं की शिकायत करने में कतराते हैं। ऐसा नहीं है कि सभी शिक्षण संस्थाओं के छात्रावासों में एक जैसा हाल हो, लेकिन जहां भी भोजन व आवास व्यवस्था में कुप्रबंधन की शिकायतें आती हैं उसमें संस्थानों के लालच के साथ-साथ निगरानी का अभाव भी साफ नजर आता है। देखा जाए तो विद्यार्थियों के साथ मारपीट व अमानवीय व्यवहार भी माता-पिता के उस भरोसे को तोड़ने वाला है, जिसमें वे अपने बच्चों को घर से दूर रखकर पढ़ने भेज देते हैं। शिक्षण संस्थान किसी भी स्तर का हो, यह उम्मीद की जाती है कि वहां बच्चों को अच्छी शिक्षा, छात्रावासों में पौष्टिक भोजन के साथ सुरक्षित वातावरण भी मिलेगा। बच्चों को आखिरकार कठोर कदम उठाने को मजबूर क्यों होना पड़ा?

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

देश की राजनीति में बदलाव के सवाल पर हो मंथन

ज्योति मल्होत्रा

पुरानी व्यवस्था निरंतर बदल रही है और उसकी जगह नया निजाम ले रहा है, लेकिन पिछले कुछ घंटों में ऐसा लगा कि बुजुर्ग हों या युवा, दोनों ही, सत्ताधारियों के प्रति अपनी निराशा व्यक्त कर रहे हैं। सर्वप्रथम, पंजाब की राजनीति के वयोवृद्ध नेता, 84 वर्षीय पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने बताया कि 2017 से 2022 तक मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह से सीमा पार से ड्रोन के जरिए नशा स्मगलिंग का मुद्दा उठाया था; जब कान नहीं धरा तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 'दिल्ली को पंजाब की समझ नहीं'। सिंह ने कहा कि भाजपा ने राज्य में नीति और राजनीति के मामलों पर उनसे कभी सलाह नहीं ली और पार्टी में शामिल होने से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

वरिष्ठ नेता की नाराजगी के अलावा, बीते गुरुवार दिल्ली में युवाओं की 'कॉकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) की प्रेस वार्ता में भी आक्रोश ऐसा ही था। पार्टी ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग की। यह मांग 'इंडियन एक्सप्रेस' के खुलासे के बाद आई कि मुख्य चुनाव आयुक्त को चुनाव आयोग के सॉफ्टवेयर के जरिए वोटों के नाम हटाए जाने की जानकारी के बावजूद उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की। यहां प्रमुख सवाल राजनीतिक महत्वाकांक्षा की सीमाओं को लेकर है—और क्या उम्र का इससे लेना-देना होना चाहिए। क्या बीजेपी अमरिंदर द्वारा अपनी पार्टी की आलोचना और पंजाब में पार्टी को नुकसान पहुंचाने की उनकी क्षमता पर कोई ध्यान देना चाहेगी, वह भी काफी अहम विधानसभा चुनावों से पहले? इतना ही महत्त्वपूर्ण यह कि क्या आप उस संगठन की मांगें अनदेखा कर सकते हैं जो कोई सियासी दल भी नहीं? खासकर तब, जब पिछली बार सीजेपी के प्रदर्शन पर सख्ती की थी, तो शिक्षा मंत्री को हटाना पड़ा था? इंडियन

एक्सप्रेस की रिपोर्ट आने के बाद उठे हंगामे के बीच खामोश संदेश पर विचार जरूरी है, हालांकि राजसत्ता अब खुद को संभाल रही है।

मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे के लिए सीजेपी द्वारा 48 घंटे की मोहलत जैसे-जैसे पास आती गई, जंतर-मंतर पर फिर बैरिकेड्स लगा दिए। ज्ञानेश कुमार ने अपने दौरे रद्द कर दिए। न केवल विपक्ष, बल्कि चिराग पासवान और उपेंद्र कुशवाहा जैसे भाजपा के सहयोगी भी अब दबाव डाल रहे हैं व मांग कर रहे हैं कि मुख्य चुनाव आयुक्त 'लोगों के मन में बनी गलत धारणाएं दूर करें'। निस्संदेह, देश 'दो हिस्सों' में बंटा है। दिल्ली में जुलाई के विरोध—



प्रदर्शन के बाद सीजेपी ने धीरे-धीरे दायरा बढ़ाया—आए दिन सीजेपी की सोशल मीडिया पर वीडियो दिखती हैं जो उनकी 'स्कूल ठीक करो' मुहिम के तहत सरकारी स्कूलों की बदहाली बताती हैं; खुद दलित समुदाय से संबंधित अभिजीत दीपके की कोशिश है कि आईआईटी बॉम्बे में छात्र की मौत के बाद ध्यान जाति, वर्ग भेद पर चर्चा से परे मानसिक सेहत पर रहे। सवाल उठता है कि सिवाय आम आदमी पार्टी के, जिसने पंजाब में अपने 'स्कूल ऑफ एमिनेंस' परियोजना पर काफी मेहनत की है (भले ही नतीजे मिले-जुले रहे) किसी भी अन्य सियासी दल ने शिक्षा जैसे अहम मुद्दे पर ध्यान क्यों नहीं दिया? सिवाय उस वक्त, जब वे निजी विश्वविद्यालय स्थापित कराती हैं व सस्ती दरों पर संसाधन उनके हवाले करती हैं? सीजेपी हमें आईना दिखा रहा है कि यह सब आपके आस-पास हो

रहा था, आपने ध्यान नहीं दिया। सच तो यह कि हमने देखा था, लेकिन या तो ऐसी स्थितियां बनाने में हमारा योगदान भी रहा, या अत्यधिक निराशावादी बने रहे, या फिर परवाह नहीं रही। फिर भी, विधानसभा चुनाव निकट आने पर चुनाव आयोग के कामकाज में कथित गड़बड़ी का असर होकर रहेगा—पंजाब के अलावा उत्तर प्रदेश, मणिपुर, गोवा और उत्तराखंड में भी फरवरी में चुनाव हैं। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट में गोवा की चर्चा है; कि 97 वोटों के नाम स्थानीय चुनाव अधिकारियों की कोशिश के बावजूद वोटर लिस्ट में नहीं जुड़े। आगे क्या हो सकता है, इसे लेकर दो किस्म की राय

है। एक राय कांग्रेस नेता राहुल गांधी को श्रेय देती है; इसका तर्क है कि उनके चलाए 'वोट चोरी' अभियान ने कुछ सालों से मुद्दे को आगे बढ़ाया, और अगर चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर अविश्वास हो, तो इसका सर्वाधिक फायदा उनकी पार्टी को ही होगा।

दूसरा नजरिया भाजपा और आरएसएस में चल रही हलचल और इस बात का संकेतक है कि चुनाव आयोग के खुलासों का पार्टी के शीर्ष नेताओं की स्थिति पर क्या असर पड़ेगा। जाहिर है, अगर चुनावी राज्यों में कहीं भी भाजपा की रफ्तार को झटका लगा, तो असर उन लोगों की किस्मत पर पड़ेगा जो पार्टी में उच्चपदस्थ लोगों की आंख का तारा बनने में लगे हैं। दूसरे नजरिए के मुताबिक, राहुल गांधी इंदौर जैसी कितनी भी रैलियां कर लें, लेकिन बदलाव भाजपा के अंदर से ही आएगा।

डॉ. वीरेंद्र लाथर

दिल्ली में वायु प्रदूषण की समस्या पर सुप्रीम कोर्ट ने 17 सितंबर, 2024 को कहा कि पड़ोसी राज्यों के किसानों को पराली जलाने के लिए मुकदमे से पूरी तरह से छूट नहीं मिल सकती। कोर्ट ने सुझाव दिया कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग उल्लंघनकर्ताओं को जवाबदेह ठहराने के लिए दंडात्मक प्रावधान लागू करे। न्यायालय ने राज्यों और अन्य संबंधित अधिकारियों को पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 15 के अंतर्गत आने वाले सभी उल्लंघनों के अनुसार जुर्माना वसूलने के निर्देश भी दिए। केंद्र सरकार ने नए नियमों के तहत फसल अवशेष जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए जुर्माने की राशि खेत के आकार के आधार पर तय की है। वहीं समय पर जुर्माना न भरने पर इसे भू-राजस्व के बकाया के रूप में वसूला जा सकता है। इसके साथ ही, पराली जलाने से जुड़े खेतों को 15 महीने के लिए 'रेड कैटेगरी' में रखने जैसे प्रावधानों का मसौदा तैयार किया है।

इसके तहत जमीन के रिकॉर्ड में 'रेड एंट्री' दर्ज होने से संबंधित किसान को फसल बेचने के साथ ऋण लेने और जमीन को बंधक रखने संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है और जुर्माने का प्रावधान भी है। इस मामले में बिना वैज्ञानिक तथ्यों को जाने और पराली प्रबंधन हेतु बिना व्यावहारिक विकल्प सुझाए किसानों पर दंडात्मक कार्रवाई करना सही नहीं है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आसपास के राज्यों में वायु प्रदूषण की समस्या के प्रमुख कारणों में वाहनों का उत्सर्जन, औद्योगिक प्रदूषण, निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल और पराली दहन आदि को जिम्मेदार माना

वैज्ञानिक व किसान मिलकर तलाशें पराली का समाधान



जाता है। दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक हर महीने बदलता रहता है। वायु प्रदूषण मानव निर्मित कारणों के अतिरिक्त मौसम और मानसून वर्षा चक्र जैसे अन्य कारकों पर भी निर्भर करता है।

अक्टूबर महीने में मानसून की वापसी के साथ हवाओं के उत्तर में हिमालय पर्वत की दिशा से दक्षिण की ओर बहने से मौसम में ठंडक बढ़ने लगती है और वायु गति में भारी कमी दर्ज होती है। आमतौर पर दिल्ली की हवा मानसून की वर्षा के महीनों (जून-सितंबर) में स्वच्छ होती है, जबकि सर्दियों के महीनों (अक्टूबर-मार्च) में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। तब तापमान गिरने से धूल के कण पृथ्वी की निचली सतह के पर्यावरण में जम जाते हैं। वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार सबसे ज्यादा प्रदूषण नवंबर-मार्च के सर्द मौसम में होता है, जबकि धान की फसल की कटाई अक्टूबर तक होकर नवंबर में गेहूं की बुआई लगभग पूरी हो जाती है। इसलिए केवल किसान को वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार ठहराना तथ्यों के विपरीत है। भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान की रिपोर्ट के

अनुसार, वायु प्रदूषण में फसल अवशेष जलाने की हिस्सेदारी सर्द मौसम के शुरुआती अक्टूबर महीने में 25 प्रतिशत तक पहुंच जाती है, जबकि अन्य महीनों में यह हिस्सेदारी बहुत कम, नाममात्र रह जाती है। लेकिन देश का प्रशासनिक तंत्र वायु प्रदूषण के मुख्य कारणों—वाहनों का उत्सर्जन, औद्योगिक प्रदूषण, निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल आदि—को रोकने में अपनी नाकामी को छिपाने के लिए वायु प्रदूषण का ठीकरा किसानों के सिर फोड़ता है। उल्लेखनीय है कि पराली दहन उत्तर-पश्चिम भारत में वायु प्रदूषण का एक कारण है, जो मिट्टी की उर्वरता और मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है।

ये प्रदूषक धुंध की मोटी परत बनाते हैं, जो सूर्य की रोशनी को रोकती है और स्वास्थ्य समस्याएं पैदा करती है। निस्संदेह, वायु प्रदूषण की आपदा के लिए तंत्र की गलत नीतियां जिम्मेदार हैं। इन राज्यों में धान की कटाई के बाद मिलने वाली अल्प अवधि में पराली को खेतों में बंडल बनाकर दूर-दराज स्थित उद्योगों में निपटान करने वाला सरकारी प्रयास तकनीकी तौर पर

अव्यावहारिक, महंगा और पर्यावरण हितैषी भी नहीं है। इन नाकामियों के बावजूद, कृषि अवशेष जलाने की रोकथाम की दिशा में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा भारी-भरकम मशीन वाले विकसित ढांचे 'एक्स-सीटू' पराली प्रबंधन के लिए कुशल और मजबूत आपूर्ति शृंखला सुनिश्चित करने के लिए राज्यों को हर साल सलाह जारी की जा रही है। 'एक्स-सीटू' पराली प्रबंधन में इस्तेमाल होने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों की करोड़ों रुपये मूल्य की मशीनों की सरकारी सब्सिडी पर बिक्री ही तंत्र का मुख्य उद्देश्य है। बिना सरकारी सब्सिडी वाले और किसान हितैषी समाधान के रूप में हरियाणा वायु प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और सरकार द्वारा 16 अगस्त, 2018 को वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण अधिनियम) के तहत कंबाइन हार्वेस्टर के लिए स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम को अनिवार्य करने वाले आदेश को कंबाइन हार्वेस्टर मालिकों के दबाव के कारण पिछले 8 वर्षों से लागू ही नहीं किया गया है।

पाराली निपटान का पर्यावरण हितैषी समाधान इसे खेत में ही समाविष्ट करके जैविक खाद बनाना है। साथ ही, धान की कटाई के बाद प्रति एकड़ 30 किलो यूरिया छिड़ककर और मोल्ड बोर्ड हल या हैरो से पराली को मिट्टी की गहरी परतों में दबाने से यह 45 दिनों में जैविक खाद में बदल जाती है। दरअसल, इससे पराली में मौजूद नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम संरक्षित होते हैं, जिससे अगली फसल की पैदावार में वृद्धि और मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है। इसके लिए सुपर स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम से लैस कंबाइन हार्वेस्टर जरूरी हैं, जो पराली को छोटे टुकड़ों में काटकर खेत में फैलाते हैं। सरकार को किसानों के हित में प्रोत्साहन और संसाधन प्रदान करने चाहिए।

घर पर अपनों के लिए बनाएं ये देसी फूड

बारिश का मौसम खत्म होते ही किचन में भी कई चीजें बदलने लगती हैं। अक्टूबर की शुरुआत में मौसम में हल्की गर्माहट और नमी के बीच ऐसी देसी चीजें आसानी से मिल जाती हैं, जिनसे स्वादिष्ट और घर का खाना तैयार किया जा सकता है। अगर आप हर दिन एक जैसी सब्जी और नाश्ते से बोर हो गए हैं, तो यह समय पारंपरिक और सीजनल फूड को अपनी प्लेट में शामिल करने का है। स्थानीय और शुद्ध सामग्री से बनी रेसिपीज की खासियत यह है कि इनमें स्वाद के साथ घर की रसोई वाली सादगी भी बरकरार रहती है। इन्हें सितंबर में अलग-अलग तरीके से तैयार किया जा सकता है। खास बात यह है कि इनके लिए बहुत ज्यादा महंगी या मुश्किल सामग्री की जरूरत नहीं पड़ेगी।

चना मसाला चाट और पोहा

उबले हुए काले या सफेद चने में प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, धनिया और नींबू मिलाएं। इसमें भुना जीरा और चाट मसाला डालें। कुछ ही मिनट में एक आसान देसी स्नैक तैयार हो जाएगा। पोहा धोकर कुछ मिनट के लिए रखें। कड़ाही में मूंगफली, राई, करी पत्ता और हरी मिर्च का तड़का लगाएं। इसमें पोहा, हल्दी और नमक डालकर अच्छी तरह मिलाएं। ऊपर से नींबू और धनिया डालें।



अरबी की कुरकुरी सब्जी

अरबी को सबसे पहले अच्छे से धुलें फिर उसे उबालकर छीलें और टुकड़ों में काटें। इसमें हल्दी, धनिया, लाल मिर्च, नमक और थोड़ा बेसन मिलाएं। तवे पर कम तेल में सुनहरा और कुरकुरा होने तक पकाएं। ऊपर से नींबू का रस डालकर सर्व करें।



मूंगदाल की खिचड़ी और चीला

धुली मूंग दाल और चावल को धोकर कुकर में हल्दी, नमक और थोड़ा घी डालें। पानी डालकर नरम होने तक पकाएं। ऊपर से घी और जीरे का तड़का डालें। साथ में दही, अचार या हरी चटनी परोसने से साधारण खिचड़ी भी स्वादिष्ट डिनर बन सकती है। मूंग दाल को भिगोकर पीस लें और इसमें अदरक, हरी मिर्च, नमक और धनिया मिलाएं। गर्म तवे पर थोड़ा घोल फैलाकर दोनों तरफ से सेंकें। इसे हरी चटनी के साथ सर्व करें।

गुड़ और तिल की मीठी रोटी

आटे में थोड़ा तिल और गुड़ मिलाकर नरम आटा तैयार करें। छोटी रोटी बेलकर तवे पर सेंकें। ऊपर से थोड़ा घी डालें। सुबह के नाश्ते या शाम की चाय के साथ इसे परोसा जा सकता है।

बाजरे की रोटी और सब्जी



बाजरे के आटे में हल्का नमक डालकर गुनगुने पानी से आटा गूथें। हाथों से रोटी तैयार करके तवे पर सेंकें। इसे मौसमी सब्जी, दही या घर की चटनी के साथ परोसें। देसी खाने का यह कॉम्बिनेशन खास तौर पर पारंपरिक स्वाद पसंद करने वालों को पसंद आ सकता है। ताजे कद्दू को छोटे टुकड़ों में काटकर सरसों के तेल में जीरा, हींग और हरी मिर्च का तड़का दें। इसमें कद्दू, हल्दी, धनिया पाउडर और नमक डालकर धीमी आंच पर पकाएं। आखिर में थोड़ा अमचूर या सूखा मसाला डालने से स्वाद और बढ़ जाता है। इसे गरमा-गरम रोटी या परांठे के साथ परोस सकते हैं।

मक्के की मसाला रोटी

मक्के के आटे में नमक और थोड़ा गर्म पानी डालकर नरम आटा तैयार करें। इसे हाथ से थपथपाकर रोटी का आकार दें और तवे पर सेंकें। ऊपर से थोड़ा घी लगाकर दही या सब्जी के साथ परोसें।



हंसना मजा है

डॉक्टर: जब आपको पता था, छिपकली आपके नाक में जा रही है, तो आपने रोका क्यों नहीं? मरीज: पहले कॉकरोच गया था, मैंने सोचा उसे पकड़ने जा रही होगी।

पप्पू: बताओ वो कौन सी औरत है जिसको सौ प्रतिशत पता होता है की उसका हसबैंड कहां है? पप्पू ने अपना खतरनाक दिमाग लगाया और बोला, विधवा औरत।

पापा: नालायक, तुमने अपनी मम्मी से ऊंची आवाज में बात क्यों की? बेटा: मुझे पता है पापा आपको जलन हो रही है क्योंकि आप ऐसा नहीं कर सकते।

आदमी: सर, मेरी वाइफ गूम गई है, पोस्टमैन: यह पोस्ट ऑफिस है, पुलिस स्टेशन नहीं, आदमी: ओह सॉरी! साला खुशी के मारे कहा जाऊं, कुछ समझ में नहीं आ रहा!

पति- सुनो, तुमने मुझमें ऐसा क्या देखा था जो मुझसे शादी के लिए हां कर दी। पत्नी- मैंने बालकनी से आपको एक-दो बार बर्तन साफ करते हुए देखा था।

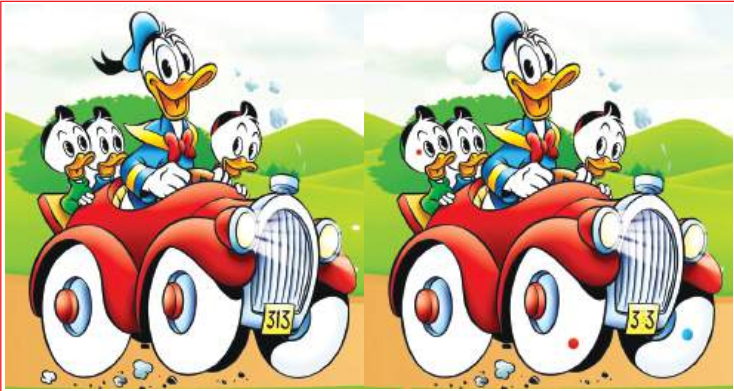
वाईफ: सुबह मेरे चेहरे पे पानी क्यों डाला? हसबैंड: तेरे बाप ने कहा था, मेरी बेटे फुल की तरह है इसे मुरझाने मत देना।

कहानी

मूर्खों का बहुमत

एक जंगल में एक उल्लू रहता था। दिन में दिखाई न देने के कारण वह दिनभर एक पेड़ पर अपने घोंसले में छिपकर रहता था। सिर्फ रात होने पर ही वह भोजन के लिए बाहर निकलता था। एक बार दोपहर के समय कहीं से एक बंदर आया और वह उल्लू के घोंसले वाले पेड़ पर आकर बैठ गया। गर्मी और धूप से परेशान बंदर ने कहा-ऊफ, बहुत गर्मी है। बंदर की बात को उल्लू ने भी सुन लिया। उससे रहा नहीं गया और बीच में ही बोल पड़ा-यह तुम झूठ कह रहे हो? सूर्य नहीं, बल्कि अगर चंद्रमा के चमकने की बात कहते तो मैं इसे सच मान लेता। बंदर बोला-भला दिन में चंद्रमा कैसे चमक सकता है। वह तो रात में चमकता है और यह दिन का समय है। उस बंदर ने उल्लू को अपनी बात समझाने का बहुत प्रयास किया कि दिन में सूरज ही चमकता है चंद्रमा नहीं, लेकिन उल्लू भी अपनी ही जिद पर अड़ा था। इसके बाद उल्लू ने कहा-चलो, हम दोनों मेरे एक मित्र के पास चलते हैं, वही इसका निर्णय करेगा। बंदर और उल्लू दोनों एक दूसरे पेड़ पर गए। उस दूसरे पेड़ पर उल्लूओं का एक बड़ा झुंड रहता था। उल्लू ने सभी को बुलाया और उनसे कहा कि दिन में आकार में सूर्य चमक रहा है या नहीं यह तुम सब मिलकर बताओ। उल्लू की बात सुनकर उल्लूओं का पूरा झुंड हंसने लगा। वह बंदर की बात का मजाक उड़ाने लगे। उन्होंने कहा-नहीं, तुम बेवकूफों जैसी बात कर रहे हो। इस समय आकार में तो चंद्रमा ही चमक रहा है और आकाश में सूर्य के चमकने की झूठी बात बोलकर हमारी बस्ती में झूठ का प्रचार मत करो। उल्लूओं के झुंड की बात सुनने के बाद भी बंदर अपनी ही बात पर अड़ा हुआ था। जिससे गुस्साए उल्लूओं ने बंदर को मारने के लिए उसपर झपट पड़े। दिन का समय था और उल्लूओं को कम दिखाई दे रहा था इसी वजह से बंदर वहां से बचकर भाग निकलने में कामयाब हो गया और उसने अपनी जान बचाई।

7 अंतर खोजें



जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

मेष 	कार्यक्षेत्र में नई योजनाओं पर काम शुरू करने की ऊर्जा रहेगी। व्यापार में नए अवसर मिल सकते हैं, लेकिन जल्दबाजी से बचें। रुके आर्थिक मामलों में प्रगति हो सकती है।	तुला 	नौकरी में पदोन्नति या नई जिम्मेदारी पर चर्चा हो सकती है। व्यापारिक साझेदारी से लाभ के अवसर बनेंगे। प्रेम जीवन में सुखद समय बिताने का अवसर मिलेगा।
वृषभ 	मेहनत का सकारात्मक परिणाम मिल सकता है। कारोबार में बड़े सौदों पर बातचीत आगे बढ़ेगी। परिवार और जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।	वृश्चिक 	एकाग्रता और निर्णय क्षमता से काम में सफलता मिल सकती है। प्रॉपर्टी से जुड़े मामलों में अवसर मिलेंगे, लेकिन कामजात जांचें। घर का माहौल सुखद रहेगा।
मिथुन 	नए विचारों की कार्यस्थल पर सराहना हो सकती है। व्यापार में तकनीक और संचार से फायदा होगा। प्रेम संबंधों में पुरानी गलतफहमियां दूर हो सकती हैं।	धनु 	नई जिम्मेदारी मिल सकती है और यात्रा का योग बन सकता है। व्यापार में रुके काम गति पकड़ेंगे। संतान पक्ष से सकारात्मक समाचार मिल सकता है।
कर्क 	सहकर्मियों के साथ मिलकर काम करने से फायदा होगा। व्यापार में बड़े निर्णय लेते समय सावधानी रखें। परिवार में धार्मिक गतिविधि की योजना बन सकती है।	मकर 	अधिकारियों के साथ तालमेल बेहतर होगा। पुराने व्यापारिक संपर्क उपयोगी साबित हो सकते हैं। परिवार में शांति और सहयोग बना रहेगा। पुरानी थकान कम हो सकती है।
सिंह 	करियर में अपनी नेतृत्व क्षमता दिखाने का अवसर मिलेगा। व्यापार में नए ग्राहक जुड़ सकते हैं। दायित्व जीवन में प्रेम और सम्मान बढ़ सकता है।	कुम्भ 	पराक्रम और साहस से कठिन काम पूरे कर पाएंगे। छोटी व्यापारिक यात्राएं उपयोगी साबित हो सकती हैं। मित्रों और प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। उत्साह बना रहेगा।
कन्या 	काम का दबाव बढ़ सकता है, इसलिए योजनाबद्ध तरीके से काम करें। प्रतिद्वंद्वियों से सावधान रहें, जरूरी जानकारी साझा न करें। जीवनसाथी से बातचीत में संयम रखें।	मीन 	वाणी और संवाद शैली से कार्यस्थल पर प्रभाव पड़ेगा। व्यापार में लाभ के अवसर मिलेंगे, लेकिन अति जोखिम से बचें। परिवार में मांगलिक चर्चा हो सकती है।



तनीषा मुखर्जी के घर की कट गई बिजली

भारी बिजली बिल के कारण लोनावला स्थित बिग बॉस 7 फेम तनीषा मुखर्जी के पुश्तैनी घर की बिजली काट दी गई। एक्ट्रेस ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से भी मामले में दखल देने की अपील की है। यही नहीं, अजय देवगन की साली ने यहां तक कहा है कि लोनावला का बिजली विभाग माफिया की तरह काम कर रहा है। दिग्गज एक्ट्रेस तनुजा की बेटी तनीषा की पुणे के लोनावला में एक विंटेज-स्टाइल पुश्तैनी प्रॉपर्टी है। वह अक्सर खास मौकों और छुट्टियों पर पूरे परिवार के साथ वहां जाती हैं। मंगलवार को 48 साल की एक्ट्रेस ने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट एक्स पर महाराष्ट्र राज्य बिजली बोर्ड की आलोचना की है।

तनीषा मुखर्जी ने कुछ समय पहले ही एक वीडियो में अपनी दादी के पुश्तैनी लोनावला घर का टूर कराया था। इसे खूबसूरती से एक हेरिटेज होमस्टे में बदल दिया गया है। इसका नाम फ्रैंजुपानी हाउस है। उन्होंने 6 जून को इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए घर की झलक दिखाई और कैप्शन में लिखा, फ्रैंजुपानी हाउस - मेरी मशहूर सुपरस्टार दादी शोभना समर्थ का घर। इस शानदार घर की हर दीवार और हर कोने की अपनी एक कहानी है।

तनीषा ने खुद से डिजाइन किया घर, ठीक वैसा जैसा दादी चाहती थीं तनीषा ने वीडियो में यह भी बताया कि उन्होंने ही इस जगह को रेनोवेट और

रीडिजाइन किया है। ठीक वैसा ही, जैसा दादी चाहती थीं। एक्ट्रेस ने कहा, मैं इसे बहुत ज्यादा बदलना नहीं चाहती थी। मैं उनके लगाए किसी भी पेड़ को काटना नहीं चाहती थी। मेरा और मेरी मां का पूरा बचपन इसी घर में बीता है और हमने इसे बहुत असली और ओरिजिनल बनाए रखा है।

यूजर ने पूछा- बिजली बिल क्यों नहीं भरा, मिला करारा जवाब

तनीषा के इस पोस्ट पर यूजर्स के भी कमेंट आ रहे हैं। एक ने पूछा कि वह ड्यू डेट से पहले बकाया रकम चुकाने का इंतजार क्यों कर रही हैं। जवाब में तनीषा ने कहा, कोई भी आखिरी तारीख का इंतजार नहीं कर रहा है। लेकिन ड्यू डेट से पहले बिजली काटना और ऐसे बिल का पेमेंट करने के लिए जोर देना जो वेरिफाइड नहीं है, गैर-कानूनी है!

फराह खान ने मिथुन चक्रवर्ती के स्ट्रगल के दिनों को उनके घर पहुंचकर साझा किया

मिथुन चक्रवर्ती ने अपनी लाइफ में जहां ऊंचाइयां देखी हैं वहीं उन्होंने वो दौर भी देखा है जहां खाने-पीने को लेकर भी आफत होती थी। उनकी लाइफ में संघर्षों का दौर ऐसा रहा है कि कभी पेट भरने के लिए पार्टियों में डांस तक करने पहुंच जाते थे। कई रातों उन्होंने सड़कों के किनारे फुटपाथ पर सोकर काटी हैं। आज इंडस्ट्री में वे टॉप सितारों में गिने जाते हैं। फराह खान उनके घर पहुंची हैं और इसी दौरान उनके ये पुराने किस्से भी खुलकर सामने आए। फिल्ममेकर और कोरियोग्राफर फराह खान मिथुन चक्रवर्ती के घर पहुंची और एक्टर के पुराने दिनों और उनके स्ट्रगल की पूरी कहानी अपने दर्शकों और उनके बच्चों को सुनाई। फराह खान ने बताया कि उनके बचपन के दिनों में मिथुन उनके मामा केके शुक्ला की पार्टियों में डांस करने आया करते थे। उस समय वह डांस के बदले पैसे नहीं लेते थे, बल्कि उन्हें रात का खाना मिल जाता था। फराह खान ने मिथुन के बेटों से बात करते हुए उस पुराने दौर को याद किया और कहा, तुम्हारे पापा पार्टियों में आया करते थे और डांस करते थे ताकि उन्हें खाने को मिल



कभी रास्ते में सोया, कभी गार्डन में : मिथुन

फराह खान ने कहा, सब लोग बोलते हैं न कि मैं स्ट्रगल कर रहा, ये था स्ट्रगल। फराह ने उनके संघर्ष की कहानी कहते हुए आगे कहा, कहां-कहां सोए हो आप दादा। इसपर मिथुन ने कहा, कभी रास्ते में सोया, कभी गार्डन में। एक दिन तो ऐसे ही रास्ते पर नींद आ गई, सुबह उठा तो देखा फुटपाथ है।

फराह बोलीं- फर्स्ट शर्टलेस हीरो थे मिथुन

फराह बोलीं- फर्स्ट शर्टलेस हीरो यार। वहीं जब हाउस टूर कराने की बात आई तो मिथुन ने कहा, मैं नहीं आ रहा, मेरे बैक में लगी है। इसपर फराह ने पूछा- ऐसा क्या किया आपने जो लगी है। मिथुन बोले, वो लक (2009) में जो लगी थी। सबने हेलिकॉप्टर से जंप मारा तो कुछ नहीं, मैंने मारा तो कहां से छोटा सा पत्थर आकर लगी। अभी ठीक हो गया, हेयरलाइन फ्रैक्चर था लेकिन डॉक्टर ने बोला कम मूव करो तो बेहतर है।

सके। मां कहती थीं, हमलोग छोटे थे, वे कहते थे- मिथुन को बुलाओ, वो बहुत अच्छा डांस करता है और ये आते थे, कोई पैसे नहीं लेते थे बस चाहते थे कि सिर्फ मिल जाए। तो ऐसी स्ट्रगल देखी है इन्होंने।

जुबिन नौटियाल के घर गुंजी किलकारी

सिगर जुबिन नौटियाल के घर खुशियों की किलकारी गुंजी है। वह पिता बन गए हैं। इसी साल अप्रैल में शादी की औपचारिक घोषणा करने वाले सिंगर ने बताया कि वह 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी के मौके पर पिता बने हैं। जुबिन नौटियाल ने हमारे सहयोगी बॉम्बे टाइम्स से खबर की पुष्टि करते हुए बताया, हां, मैं अब पिता बन गया हूँ। हमारे बेटे का जन्म 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी के बहुत शुभ दिन पर हुआ। मां और बच्चा घर वापस आ गए हैं और दोनों ठीक हैं। जब जुबिन से पूछा कि क्या उन्होंने बच्चे का कोई नाम सोचा है, तो 37 साल के सिंगर ने कहा, हमने अभी अपने बेटे के लिए कोई नाम नहीं सोचा है। हम अभी उसके साथ बिताए जा रहे खूबसूरत पलों का आनंद ले रहे हैं।

जुबिन नौटियाल ने अपनी बचपन की दोस्त ऋचा चंदेल के साथ लगभग डेढ़ साल पहले ही गुपचुप तरीके से शादी कर ली थी। हालांकि, इस साल अप्रैल 2026 में उन्होंने एक पारंपरिक और निजी समारोह के दौरान विवाह का औपचारिक ऐलान किया। बेटे के जन्म की खुशी जाहिर करते हुए सिंगर ने कहा कि पिता बनने के बाद अब काम के सिलसिले में यात्रा करना थोड़ा मुश्किल होगा। वह बोले, जब मुझे

शहर से बाहर जाना होगा, तो मुझे पता है कि यह मुश्किल होगा। मैं अभी अपने बच्चे के साथ हर पल बिता रहा हूँ और यह बहुत अच्छा एहसास है। जुबिन नौटियाल एक बेहद मशहूर बॉलीवुड सिंगर हैं। वह 200 से अधिक गाने गा चुके हैं। उत्तराखंड के देहरादून के रहने वाले जुबिन ने 2011 में रियलिटी शो एक्स फैक्टर इंडिया में हिस्सा लिया था। बाद में फिल्म सोनाली केबल (2014) के गाने एक मुलाकात से उन्होंने बॉलीवुड में प्लेबैक सिंगर के तौर पर डेब्यू किया। इसके बाद फिल्म द शोकीन्स का गाना मेहरबानी ने उन्हें पहचान दी।

जुबिन नौटियाल को पहला बड़ा ब्रेक सलमान खान की ब्लॉकबस्टर फिल्म बजरंगी भाईजान से मिला। इसके गाने जिंदगी कुछ तो बता और फिर ऋतिक रोशन की फिल्म काबिल के टाइटल ट्रैक ने उन्हें स्टार बना दिया। जुबिन के फैंस के बीच उनके गाए हिट गानों तुम ही आना, लुट गए, हमनावा मेरे, तारों के शहर और मेरी जिंदगी है तू की धूम रहती है। शेरशाह का मशहूर गाना रातां लंबियां भी जुबिन ने ही गाया है।



17 साल बाद फिर आर. बाल्की के साथ काम कर रहीं विद्या बालन

विद्या बालन और आर. बाल्की इससे पहले साल 2009 में आई फिल्म 'पा' में साथ काम कर चुके हैं। इस फिल्म में अमिताभ बच्चन मुख्य भूमिका में थे। अब करीब 17 साल बाद विद्या और बाल्की की जोड़ी एक बार फिर साथ आई है। विद्या ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर फिल्म की एक झलक शेयर की। तस्वीर में वह हाथ में स्क्रिप्ट लिए नजर आ रही हैं। उन्होंने चश्मा लगाया हुआ है और लंबे बालों की चोटी बनाई हुई है। अपने इस लुक की तस्वीर शेयर करते हुए विद्या ने लिखा, नई शुरुआत। आर. बाल्की के साथ नई तमिल फिल्म। फिलहाल फिल्म की कहानी या विद्या के किरदार के बारे में कोई जानकारी सामने नहीं आई है। मेकर्स ने भी प्रोजेक्ट से जुड़ी ज्यादातर जानकारी को सीक्रेट रखा है। विद्या की सोशल मीडिया पोस्ट से सिर्फ इतना पता चला है कि फिल्म पर काम शुरू हो चुका है।

दुनियाभर में स्ट्रीम होगा पॉप स्टार शकीरा का कॉन्सर्ट, चार को भारत में ले सकेंगे आनंद

पाप स्टार शकीरा इन दिनों अपने कॉन्सर्ट को लेकर चर्चा में हैं। वह इन दिनों

अपने लास मुजेरेस या नो लोरान वर्ल्ड टूर पर हैं।

इस टूर के तहत सिंगर तीन अक्टूबर को मैड्रिड में होने वाले अपने कॉन्सर्ट को दुनिया भर में लाइव-स्ट्रीम करेंगी। यह पहली बार होगा जब शकीरा का पूरा कॉन्सर्ट इस तरह से दुनियाभर में दिखाया जाएगा। भारत के फैंस भी इस कॉन्सर्ट का आनंद ले सकेंगे।

भारत में मौजूद फैंस देर रात सिंगर की लाइव परफॉर्मेंस का आनंद ले सकेंगे। यह कॉन्सर्ट 4 अक्टूबर को रात 12.15 बजे अमेजन म्यूजिक इंडिया ऐप, प्राइम वीडियो, फायर टीवी और टिविच पर अमेजन म्यूजिक चैनल पर स्ट्रीम होगा। इसके लिए किसी पेड सब्सक्रिप्शन

की जरूरत नहीं है। मैड्रिड शो शकीरा के बहुत बड़े वर्ल्ड टूर के आखिरी पड़ावों में से एक है। लास मुजेरेस या नो लोरान का दौर शकीरा की पर्सनल जिंदगी के मुश्किल समय में शुरू हुआ था और बाद में यह एक एल्बम और एक बड़े ग्लोबल टूर में बदल गया। अब, जब यह टूर अपने आखिरी पड़ाव पर है, तो सिंगर उन फैंस को घर बैठे शो का अनुभव करने का मौका दे रही हैं जो मैड्रिड नहीं जा सकते। इस कॉन्सर्ट को लेकर शकीरा ने कहा, लास मुजेरेस या नो लोरान वर्ल्ड टूर मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा बड़ा बन गया है।



इंडिया गठबंधन की बैठक में चुनाव आयोग पर प्रहार

एसआईआर, ईवीएम व नए मतदाताओं के पंजीकरण से जुड़े मुद्दे उठाए

» कांग्रेस, टीएमसी समेत 19 दलों ने दिखाई ताकत
» राहुल का पीएम मोदी पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन की बैठक हुई। इसमें कांग्रेस, टीएमसी समेत 19 दलों ने भाग लिया। इस बैठक में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ फैसला लिया गया। बैठक में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, ममता बनर्जी, समेत अन्य दिग्गज मौजूद रहे। यह बैठक दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में हुई। इस बैठक के दौरान सोनिया गांधी और ममता बनर्जी बातचीत करती दिखीं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने दिल्ली में बुधवार को इंडिया गठबंधन के नेताओं के साथ बैठक में चुनाव आयोग, मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर), ईवीएम और नए मतदाताओं के पंजीकरण से जुड़े मुद्दे उठाए। खरगे ने अपने शुरुआती संबोधन को सोशल मीडिया पर साझा करते हुए

सीईसी को ममता बनर्जी ने वैनिश कुमार कहा

ममता बनर्जी ने सीईसी ज्ञानेश कुमार पर निशाना साधते हुए उन्हें 'वैनिश कुमार' कहा। ममता बनर्जी ने बैठक में

एसआईआर ज़रिफ़ वोट की लूट का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि एसआईआर बहुत खराब तरीके से अंजाम दिया गया

था। उन्होंने चुनाव के बाद के हलाल का जिक्र करते हुए कहा, मैं अब घर से बाहर नहीं निकल सकती।

कहा कि लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक के वोट का समान महत्व होना चाहिए।

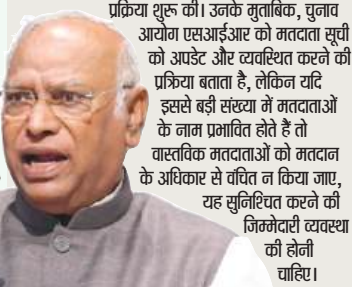
राहुल गांधी ने इंडिया गठबंधन की बैठक के बीच सवाल किए और खुद जवाब दिए। उन्होंने कहा कि सीईसी एकमात्र ऐसे भारतीय क्यों हैं जिन्हें आजीवन पूर्ण कानूनी छूट प्राप्त है? क्योंकि पीएम मोदी चुनावों



में धांधली करने के लिए उनका इस्तेमाल करते हैं। सूत्रों ने बताया कि वामपंथी पार्टियां डीएमके को गठबंधन में वापस लाने के लिए कांग्रेस पर दबाव बनाएंगी। सीपीआईएम, सीपीआई, आरपीआई डीएमके के साथ बातचीत शुरू करने की मांग करेंगी। वाम दलों का तर्क होगा कि डीएमके करीब एक सदी पुरानी राजनीतिक पार्टी है, ऐसे में उसे व्यापक विपक्षी समन्वय से अलग नहीं रखा जाना चाहिए। वाम दल कांग्रेस से डीएमके को इंडिया ब्लॉक के सामूहिक प्रयासों में शामिल करने की पैरवी करेंगे। विपक्षी एकजुटता को मजबूत करने के लिए डीएमके के साथ बातचीत आगे बढ़ाने पर जोर रहेगा।

प्रत्येक पात्र नागरिक के वोट का समान मूल्य : खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की बुनियाद इस सिद्धांत पर है कि हर नागरिक को सरकार चुनने में समान अधिकार मिले। उन्होंने खविधान सभा का जिक्र करते हुए कहा कि लोकतंत्र तभी सार्थक है, जब प्रत्येक पात्र नागरिक के वोट का समान मूल्य हो। उन्होंने दावा किया कि इस सिद्धांत के सामने मौजूदा समय में गंभीर चुनौतियां हैं और देशभर में नागरिकों तथा राजनीतिक दलों की ओर से चुनाव आयोग के कामकाज को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि विपक्ष लंबे समय से ईवीएम और मतदाता सूची में बदलाव को लेकर सवाल उठाता रहा है। खरगे ने कहा कि चुनाव आयोग ने शिकायतों को स्वीकार करने के बजाय एसआईआर प्रक्रिया शुरू की। उनके मुताबिक, चुनाव आयोग एसआईआर को मतदाता सूची को अपडेट और व्यवस्थित करने की प्रक्रिया बताता है, लेकिन यदि इससे बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम प्रभावित होते हैं तो वास्तविक मतदाताओं को मतदान के अधिकार से वंचित न किया जाए, यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी व्यवस्था की होनी चाहिए।



भाजपा युवाओं को हरियाणा में शिक्षा से वंचित कर रही : माजरा
» नूंह की सम्मान दिवस रैली से इनेलो ने दिखाई ताकत सैनी सरकार पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। इनेलो के राष्ट्रीय संरक्षक प्रो. संपत सिंह और प्रदेश अध्यक्ष रामपाल माजरा ने नूंह में हुई सम्मान दिवस रैली को लेकर भाजपा और कांग्रेस पर निशाना साधा। प्रो. संपत सिंह ने दावा किया कि नूंह की रैली ने अब तक की सभी रैलियों के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की सभी विधानसभा सीटें पिछले चुनाव में कांग्रेस के खाते में गई थीं, लेकिन रैली में उमड़ी भीड़ से इनेलो को मिल रहे समर्थन का संकेत मिला है। उन्होंने कहा कि किसान, युवा, महिलाएं और खिलाड़ी बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और अपराध जैसी समस्याओं से परेशान हैं।



भाजपा पर आरोप लगाया कि युवाओं को शिक्षा से वंचित किया जा रहा है। स्कूल-कॉलेजों में शिक्षकों और सुविधाओं की कमी है। मेडिकल कॉलेजों की इमारतें तो बनाई जा रही हैं, लेकिन डॉक्टर और अन्य स्टाफ उपलब्ध नहीं हैं। उन्होंने सरकार से नौकरियों पर श्वेत पत्र जारी कर यह बताने की मांग की कि कितनी भर्तियां निकाली गईं और कितने युवाओं को रोजगार मिला। संपत ने आरोप लगाया कि प्रदेश में नशा तस्करी और अपराध बढ़ रहा है। उन्होंने कांग्रेस शासन के दौरान गुरुग्राम सहित अन्य क्षेत्रों में जमीनों के अधिग्रहण को लेकर भी सवाल उठाए।

बैकफुट पर आया निर्वाचन आयोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आखिर विपक्ष के भारी दबाव के बाद चुनाव आयोग बैकफुट पर आया है। निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची के एसआईआर की प्रक्रिया पूरी कर चुके राज्यों में ऑनलाइन मतदाता नामांकन फॉर्म-6 से एसआईआर से जुड़ी अतिरिक्त घोषणा को हटा दिया है। यह फैसला आयोग की उस बैठक के कुछ दिनों बाद लिया गया जिसमें तय किया गया था कि यह शर्त केवल एसआईआर प्रक्रिया के दौरान ही लागू रहेगी। इस घोषणा के तहत नए आवेदकों को यह विवरण देना अनिवार्य होता है कि वे या उनके माता-पिता या दादा-दादी पहले के किसी गहन पुनरीक्षण के दौरान तैयार मतदाता सूचियों से जुड़े थे।

यह घोषणा उन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में ईसीआईनेट पोर्टल पर अब भी उपलब्ध है जहां एसआईआर प्रक्रिया जारी है। जिन राज्यों में एसआईआर की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है वहां ईसीआईनेट ऐप और



पोर्टल के साथ-साथ संबंधित मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पोर्टल से भी अतिरिक्त घोषणा वाला हिस्सा हटा दिया गया है। अब नामांकन चाहने वाले आवेदकों को केवल 'मतदाता पंजीकरण नियम, 1960' के तहत निर्धारित वैधानिक 'फॉर्म 6' ही भरना होगा। यह कदम मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और निर्वाचन आयुक्त सुखबीर सिंह संधू एवं विवेक जोशी की सदस्यता वाले पूर्ण आयोग की 26 सितंबर की बैठक के बाद उठाया

» फॉर्म-6 से हटाई एसआईआर की अतिरिक्त घोषणा

गया है। बैठक के बाद निर्वाचन आयोग ने कहा था कि फॉर्म-6 के साथ जोड़ी गई घोषणा एसआईआर के लिए थी और "गैर-एसआईआर अवधि में नियमों के अनुसार लागू फॉर्म का इस्तेमाल किया जाएगा।" फॉर्म-6 में बदलाव से जुड़ा मुद्दा उस समय विवाद का विषय बन गया था जब यह सामने आया कि संधू और जोशी ने इसमें किए गए बदलावों पर आपत्ति जताई थी। फॉर्म-6 पात्र नागरिकों द्वारा मतदाता सूची में नाम शामिल कराने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला वैधानिक फॉर्म है और जोशी ने इसमें बदलाव पर यह कहते हुए आपत्ति जताई थी कि निर्वाचन पंजीकरण नियम, 1960 के तहत निर्धारित फॉर्म में नियमों में संशोधन किए बिना बदलाव नहीं किया जा सकता।

श्री चरणी ने 817 रेटिंग अंक हासिल कर रचा इतिहास

» टी20 रैंकिंग में मेगन शट के 806 रेटिंग अंक का तोड़ा रिकार्ड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत की बाएं हाथ की स्पिनर श्री चरणी ने आईसीसी महिला टी20 गेंदबाजी रैंकिंग में नया इतिहास रच दिया है। चरणी ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 817 रेटिंग अंक हासिल की हैं। इसके साथ ही वह महिला टी20 गेंदबाजी रैंकिंग में सबसे ज्यादा रेटिंग अंक हासिल करने वाली गेंदबाज बन गई हैं। चरणी पहले से ही टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में दुनिया की नंबर-1 गेंदबाज हैं। अब उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की दिग्गज गेंदबाज मेगन शट का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। शट ने नवंबर 2018 में 806 रेटिंग अंक हासिल किए थे, जो अब तक महिला टी20 गेंदबाजी में सबसे ज्यादा थे।

श्री चरणी ने एशियन गेम्स 2026 में भारत की स्वर्ण पदक जीतने की मुहिम में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने जापान के खिलाफ मुकाबले में 10 रन देकर चार विकेट लेकर अपने टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। एशियन गेम्स के फाइनल में श्रीलंका के खिलाफ छह रन देकर तीन विकेट लेने वाली दीपि शर्मा को भी रैंकिंग में फायदा हुआ है। वह 754 रेटिंग प्वाइंट्स के साथ महिला

टी20 गेंदबाजी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुंच गई हैं। इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टोन 723 प्वाइंट्स के साथ तीसरे स्थान पर हैं। एशियन गेम्स फाइनल में 79 रन की शानदार पारी खेलने वाली स्मृति मंधाना ने भी टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग में सुधार किया है। इस प्रदर्शन के बाद उन्होंने टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग के टॉप-5 में वापसी कर ली है। वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में हालांकि मंधाना का दबदबा बरकरार है। वह 790 रेटिंग प्वाइंट्स के साथ शीर्ष पर बनी हुई हैं। ऑस्ट्रेलिया की एशले गार्डनर 497 प्वाइंट्स के साथ वनडे ऑलराउंडर रैंकिंग में शीर्ष पर बनी हुई हैं। हेली मैथ्यूज 502 प्वाइंट्स के साथ टी20 ऑलराउंडर रैंकिंग में नंबर-1 हैं। वनडे गेंदबाजी रैंकिंग में ऑस्ट्रेलिया की अलाना किंग 753



आदिवासी परिवारों को लाठी नहीं, न्याय चाहिए : सिंधार

» राहुल गांधी के दौरे से पहले कांग्रेस ने भाजपा की मोहन सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंधार ने भाजपा सरकार पर कई मुद्दों को लेकर निशाना साधा। उन्होंने बालाघाट में आदिवासी बच्चों की मौत, शिक्षक पात्रता परीक्षा, राशन की बर्बादी और केन-बेतवा लिंक परियोजना से प्रभावित परिवारों के मुद्दे उठाए। सिंधार ने बताया कि राहुल गांधी 1 अक्टूबर को बालाघाट पहुंचेंगे और प्रभावित आदिवासी परिवारों से मुलाकात करेंगे। उमंग सिंधार ने कहा कि राहुल गांधी 1 अक्टूबर को बालाघाट आएंगे। वे प्रभावित आदिवासी इलाकों में जाकर बच्चों की मौत से पीड़ित परिवारों से मुलाकात करेंगे और उनकी स्थिति की जानकारी लेंगे।



सिंधार ने कहा कि बच्चों की मौत से प्रभावित आदिवासी परिवारों की समस्याओं को समझना जरूरी है। कांग्रेस का आरोप है कि इन इलाकों में स्वास्थ्य, पोषण और सरकारी योजनाओं से जुड़ी समस्याएं हैं। नेता प्रतिपक्ष ने दावा किया कि मध्यप्रदेश में पिछले पांच साल में सरकारी और निजी गोदामों में करीब 300 करोड़ रुपये का अनाज खराब हो गया। उनके मुताबिक एक लाख मीट्रिक टन से ज्यादा राशन नमी, बारिश और चूहों के कारण बर्बाद हुआ। सिंधार ने कहा कि अनाज के रखरखाव और परिवहन पर सरकार 100 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च करती है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब प्रदेश में कुपोषण की समस्या है, तो इतनी बड़ी मात्रा में खाद्यान्न कैसे खराब हुआ। शिक्षक पात्रता परीक्षा को लेकर चल रहे आंदोलन का मुद्दा भी सिंधार ने उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपने फैसले शिक्षकों पर थोप रही है। सिंधार ने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस शिक्षकों के साथ खड़ी है और शिक्षकों के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा।

एशियन खेल: कल सेमीफाइनल में श्रीलंका से भिड़ेगा भारत

निसिन। एशियन खेल 2026 के पुरुष क्रिकेट के सेमीफाइनल में भारत का सामना श्रीलंका से होगा। दूसरे सेमीफाइनल में बांग्लादेश का सामना पाकिस्तान से होगा। दोनों सेमीफाइनल एक अक्टूबर को खेले जाएंगे। पहले सेमीफाइनल में बांग्लादेश और पाकिस्तान आमने-सामने होंगे, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में भारत और श्रीलंका भिड़ेंगे। भारतीय पुरुष टीम एशियन खेल में अपने खिताब का बचाव करने उतरी है। 2023 हंगज़ोउ एशियन खेल में भारत ने पुरुष क्रिकेट का स्वर्ण पदक जीता था। भारत और अफगानिस्तान के बीच फाइनल बारिश के कारण रद्द होने के बाद बेहतर रैंकिंग के आधार पर भारत को स्वर्ण पदक दिया गया था।

प्वाइंट्स के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में भारत की स्मृति मंधाना 790 प्वाइंट्स के साथ नंबर-1 बनी हुई हैं।

सपा राज्यसभा उम्मीदवार धनराज नथवानी ने सभी को चौकाया ॥ आखिर कौन सा खेल चल रहा है राजनीति में ॥ राज्सभा उम्मीदवारों में सपा की तरफ से कोई मुस्लिम चेहरा न होने से निराशा!

» सपा का दांव अनुभवी राम गोपाल के साथ जेन जी कनेक्ट चेहरे के तौर पर धनराज नथवानी को बनाया उम्मीदवार

» सलीम शेखानी समेत कई नाम चर्चा में थे लेकिन अखिलेश यादव ने कॉरपोरेट पृष्ठभूमि वाले धनराज नथवानी को उतारकर नई बहस छेड़ दी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के आज राज्यसभा प्रत्याशी के तौर पर प्रोफेसर रामगोपाल यादव और धनराज नथवानी ने अपना नामांकन पत्रा भरा। धनराज नथवानी झारखंड में एनडीए से राज्यसभा सांसद परिमल नथवानी के बेटे हैं और वह रिलायंस न्यू एनर्जी लिमिटेड के निदेशक भी हैं। नथवानी परिवार अंबानी परिवार और पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का करीबी माना जाता है।

यूपी की 10 राज्यसभा सीटों के चुनाव के लिए समाजवादी पार्टी ने प्रो. रामगोपाल यादव के साथ धनराज परिमल नथवानी को प्रत्याशी घोषित कर चोंका दिया है। रामगोपाल यादव पार्टी की वैचारिक और संगठनात्मक निरंतरता का चेहरा हैं जबकि धनराज नथवानी की पहचान राजनीति के पारंपरिक दायरे से बाहर कारोबारी क्षेत्र से जुड़ी है। क्योंकि वह उद्योगपति और राज्यसभा सदस्य परिमल नथवानी के बेटे हैं। समाजवादी पार्टी के इस राजनीतिक मूव को अलग अलग तरीके से देखा जा रहा है।

■ **अखिलेश का नथवानी दांव जेन जी कनेक्ट और अर्थव्यवस्था की समझ :** समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस बार सिर्फ एक उम्मीदवार का चयन नहीं किया है। बल्कि उन्होंने सपा की राजनीति को बोर्डरूम से लेकर स्टेडियम और नई पीढ़ी के सपनों तक पहुंचाने की कोशिश की है। क्योंकि



लंबे समय से रिलायंस से जुड़ा है परिवार

धनराज नथवानी के पिता परिमल नथवानी लंबे समय से रिलायंस इंडस्ट्रीज से जुड़े रहे हैं और राज्यसभा सदस्य भी रहे हैं। उनका राजनीतिक साफ़ स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर झारखंड से राज्यसभा तक पहुंचने और बाद में आंध्र प्रदेश से राज्यसभा सदस्य बनने से जुड़ा है। मुस्लिम चेहरे की चर्चा के बीच नथवानी का चयन इसी सवाल को और बड़ा करता है। क्या यह केवल एक व्यक्ति का चयन है या समाजवादी पार्टी के राजनीतिक विस्तार की दिशा में कोई संकेत? इसका जवाब आने वाले दिनों में पार्टी के फैसलों और नथवानी की भूमिका से ज्यादा साफ होगा। फिलहाल इतना तय है कि जिस सीट के लिए नामों की चर्चा में अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व का सवाल था वहां अंतिम चर्च पर कॉरपोरेट जगत से आए धनराज नथवानी का नाम है।

खेल प्रशासन से जुड़ाव भी नथवानी को अलग दर्जा देता है

धनराज नथवानी रिलायंस समूह से जुड़े रहे हैं और रिलायंस न्यू एनर्जी लिमिटेड में निदेशक की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। उनकी प्रोफाइल में इंटरनेशनल बिजनेस की पढ़ाई और कॉरपोरेट लॉ तथा पब्लिक रिलेशंस का अनुभव दर्ज है। आज जब देश की अर्थव्यवस्था तेजी से बदल रही है नई ऊर्जा, तकनीक, निवेश और रोजगार राजनीति के बड़े मुद्दे बन चुके हैं तब इन क्षेत्रों को करीब से समझने वाला व्यक्ति संसद में अलग तरह की आवाज बन सकता है। और नथवानी की कहानी सिर्फ कारोबार तक सीमित नहीं है। खेल प्रशासन से उनका जुड़ाव भी उन्हें युवाओं के बीच अलग पहचान देता है। क्रिकेट और फुटबॉल जैसे खेलों से जुड़े संगठनों के साथ उनकी भूमिका रही है। यह वह क्षेत्र है जहां देश का युवा सबसे ज्यादा भावनात्मक रूप से जुड़ा है। राजनीति और युवाओं के बीच अगर कोई सीधा पुल बनाया जा सकता है तो उसमें खेल रोजगार तकनीक और अवसर सबसे महत्वपूर्ण रास्ते हैं। अखिलेश यादव का यह फैसला सपा के लिए मायने रखता है। पार्टी अगर नयी पीढ़ी को अपने

साथ जोड़ना चाहती है तो उसे सिर्फ यह बताने से काम नहीं चलेगा कि उसने अतीत में क्या किया। उसे यह भी बताना होगा कि वह आने वाले भारत के बारे में क्या सोचती है। नथवानी जैसे चेहरे इस बातचीत को आगे बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। युवा भारत की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। वह स्टार्टअप की बात करता है नई टेक्नोलॉजी की बात करता है स्पोर्ट्स करियर को लेकर गंभीर है ग्लोबल कंपनियों और नए रोजगार के अवसरों को समझता है। ऐसे में अगर समाजवादी पार्टी के पास संसद में ऐसा व्यक्ति हो जिसने कॉरपोरेट खेल और नई ऊर्जा की दुनिया को करीब से देखा हो तो पार्टी की पहुंच का दायरा भी बड़ा हो सकता है। नथवानी की सबसे बड़ी खासियत थायद यही है कि वह पारंपरिक राजनीतिक ढांचे से बाहर की दुनिया से आते हैं। यही चीज उन्हें सपा के लिए उपयोगी बनाती है। राजनीति में पहले से मौजूद नेताओं के बीच एक ऐसा व्यक्ति जो उद्योग निवेश खेल और नई पीढ़ी की भाषा समझता हो पार्टी की बातचीत में नए विषय जोड़ सकता है।

नाम इसलिए खास है क्योंकि नथवानी की पहचान सिर्फ राजनीति से नहीं है। उनके पास कॉरपोरेट दुनिया का अनुभव है खेल से जुड़ाव है और नई अर्थव्यवस्था की समझ है। यानी सपा के पास संसद में अब ऐसा चेहरा होगा जो राजनीतिक भाषणों के साथ बोर्डरूम और बिजनेस की भाषा भी समझता है।

यूपी पुलिस को सुप्रीम फटकार

» बोली शीर्ष अदालत-बेहतर होगा यूपी पुलिस को ही खत्म कर दें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक आपराधिक जांच के दौरान उत्तर प्रदेश पुलिस के कामकाज पर कड़ी नाराजगी जताई। इसके साथ ही कहा कि वह राज्य में सभी जांच का काम सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (सीबीआई) को सौंपने का आदेश भी दे सकती है।

जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस संजीव सचदेवा की बेंच

ने टिप्पणी की कि वे यूपी पुलिस को भंग कर सकते हैं। इसके साथ ही सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन यानी की सीबीआई को राज्य में सभी जांच अपने हाथ में लेने का निर्देश दे सकते हैं। कोर्ट ने कहा, हर चीज में आपका कोई न कोई एजेंडा होता है। अगर आप मामलों को इस तरह से संभालेंगे तो लोग आप पर कैसे भरोसा करेंगे?

बेहतर होगा कि हम सीबीआई से यूपी पुलिस की सभी जांचों को संभालने के लिए कहें। हम यूपी पुलिस को भंग भी कर सकते हैं।

यह बकवास किसी न किसी मोड़ पर तो रुकनी ही चाहिए। कोर्ट ने ये कड़ी टिप्पणियां एक जांच में गंभीर अनियमितताओं पर ध्यान देने के बाद कीं, जिसमें पुलिस ने एक अज्ञात मोटरसाइकिल सवार के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी, जबकि शिकायतकर्ता ने संदिग्ध को मौके पर ही पकड़कर स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया था। जांच को जिस तरह से आगे बढ़ाया गया, उस पर निराशा जताते हुए बेंच ने टिप्पणी की।

बेंच ने कहा, नियमों का पालन करना एक बात है, लेकिन हद से ज्यादा झुक जाना और इस तरह मामले को दबाने की कोशिश करना? इस बारे में जितना कम कहा जाए, उतना ही अच्छा है। यह मामला खुद पेश होने वाली एक शिकायतकर्ता की ओर से दायर याचिका से जुड़ा था। उसने सुप्रीम कोर्ट के सामने कहा कि पुलिस की शुरुआती रिपोर्ट शुरू से ही पक्षपाती थी।

मुस्लिम चेहरे की चर्चा के बीच धनराज नथवानी पर दांव

राज्यसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के दो नाम सामने आए तो एक नाम बिल्कुल अपेक्षित था और दूसरा नाम ऐसा आया जिसने पार्टी के भीतर और बाहर सवाल खड़े कर दिए। प्रोफेसर रामगोपाल यादव की उम्मीदवारी को लेकर बहुत ज्यादा आश्चर्य नहीं था लेकिन धनराज परिमल नथवानी के नाम ने राजनीतिक हलकों में चर्चा तेज कर दी। खासकर इसलिए क्योंकि पिछले कुछ समय से यह अटकलें चल रही थी कि पार्टी राज्यसभा के लिए किसी मुस्लिम चेहरे को प्रतिनिधित्व दे सकती है। सलीम शेखानी समेत दूसरे नाम भी चर्चा में रहे थे। लेकिन अंतिम सूची में नथवानी आ गए। धनराज नथवानी का परिचय पारंपरिक समाजवादी राजनीति के नेता के तौर पर नहीं है बल्कि कॉरपोरेट और खेल प्रशासन से जुड़े व्यक्ति के तौर पर है। वह परिमल नथवानी के बेटे हैं और रिलायंस समूह से जुड़े हैं। उनकी अपनी वेबसाइट उन्हें रिलायंस न्यू एनर्जी लिमिटेड के निदेशक के रूप में परिचित कराती है जबकि कॉरपोरेट रिकॉर्ड में भी रिलायंस न्यू एनर्जी से उनका पूर्व निदेशक पद दर्ज है। यही से सवाल पैदा होता है कि आखिर समाजवादी पार्टी ने अपने राज्यसभा प्रतिनिधित्व के लिए इस चेहरे को क्यों चुना? पार्टी के पास मुस्लिम नेताओं के नामों पर विचार करने की राजनीतिक गुंजाइश थी। फिर ऐसा क्या सलीकरण बना कि अंततः कॉरपोरेट जगत से आने वाले नथवानी पर दांव लगाया गया? इसका जवाब पार्टी नेतृत्व ही दे सकता है। लेकिन उम्मीदवार के सामाजिक-राजनीतिक प्रोफाइल को देखकर इतना जरूर कहा जा सकता है कि यह चयन समाजवादी पार्टी की पारंपरिक राजनीतिक पहचान से अलग तरह का संदेश देता है।

नथानी के नामांकन के बाद फिर याद आयी संजय सेठ की कहानी

धनराज नथवानी के नाम पर राजनीतिक चर्चा तेज हो रही है तो फलैश बैक से एक और नाम की चर्चा जोर पकड़ रही है और वह है संजय सेठ का नाम। संजय सेठ को समाजवादी पार्टी ने अपने मजबूत दौर में राज्यसभा भेजा था और बाद में वही सेठ पार्टी छोड़कर बीजेपी में चले गए। संजय सेठ 2016 में समाजवादी पार्टी के राज्यसभा उम्मीदवार बने थे। उस समय वे लखनऊ के रियल एस्टेट कारोबारी के तौर पर जाने जाते थे। मई 2016 में उन्होंने स्वफंडेड अन्य उम्मीदवारों के साथ राज्यसभा के लिए नामांकन दाखिल किया। इससे पहले 2015 में अखिलेश यादव सरकार ने संजय सेठ का नाम विधान परिषद के मनोनीत सदस्यों के लिए राजभवन भेजा था। हालांकि तत्कालीन राज्यपाल राम नाईक ने उनके नाम पर आपत्ति जताई और उनकी उम्मीदवारी को मंजूरी नहीं मिली। इसके बाद 2016 में समाजवादी पार्टी ने उन्हें राज्यसभा भेज दिया। राज्यसभा पहुंचने के बाद सेठ को पार्टी संगठन में भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली। 2016 में उन्हें समाजवादी पार्टी का राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष बनाया गया था। यानी कारोबारी पृष्ठभूमि वाले एक व्यक्ति को पार्टी ने न सिर्फ संसद तक पहुंचाया बल्कि संगठन के वित्तीय ढांचे में भी महत्वपूर्ण भूमिका दी। लेकिन राजनीति में सलीकरण स्थायी नहीं होते। अगस्त 2019 में संजय सेठ ने समाजवादी पार्टी और राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया। उस समय उनकी नजदीकी अखिलेश यादव और मुलायम सिंह यादव दोनों से बताई जाती थी।

युवाओं को पार्टी की राजनीति के केंद्र में रखने की कोशिश

अखिलेश यादव ने पिछले वर्षों में युवाओं को पार्टी की राजनीति के केंद्र में रखने की कोशिश की है। नथवानी का चयन उस दिशा में एक और प्रयोग की तरह देखा जा सकता है। खासकर इसलिए कि राज्यसभा में उनकी भूमिका सिर्फ वोट डालने तक सीमित नहीं होगी। वहां वह उद्योग ऊर्जा खेल रोजगार निवेश और युवाओं से जुड़े मुद्दों को राष्ट्रीय मंच पर उठा सकते हैं। नथवानी की पृष्ठभूमि का एक और पहलू महत्वपूर्ण है। उनके पिता परिमल नथवानी उद्योग और राजनीति दोनों क्षेत्रों में लंबे समय से सक्रिय रहे हैं और राज्यसभा के सदस्य रहे हैं। यानी धनराज ने सार्वजनिक जीवन और बड़े

कारोबारी तंत्र को दूर से नहीं बेहद करीब से देखा है। सपा के लिए यह एक तरह से पुराने अनुभव और नए अनुभव का कॉम्बिनेशन है। रामगोपाल यादव जहां दशकों के राजनीतिक अनुभव का प्रतिनिधित्व करते हैं वहीं धनराज नथवानी नई अर्थव्यवस्था और प्रोफेशनल दुनिया की तरफ खुलती खिड़की है। अगर नथवानी अपनी कॉरपोरेट समझ को जनहित के मुद्दों से जोड़ पाते हैं, युवाओं के सवालों को संसद में आवाज दे पाते हैं और खेल तथा रोजगार के क्षेत्र में अपनी पहुंच का इस्तेमाल करते हैं, तो उनका राज्यसभा में जाना सपा के लिए महज एक नामांकन नहीं रहेगा।

उमर खालिद और शरजील इमाम को तीसरी बार झटका

» दिल्ली हाईकोर्ट ने खारिज की जमानत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने उमर खालिद और शरजील इमाम को बड़ा झटका लगा, क्योंकि कोर्ट ने 2020 के दिल्ली दंगों के मामले में आरोपी इन दोनों की जमानत याचिकाएं खारिज कर दीं। हाई कोर्ट ने कहा, सुप्रीम कोर्ट के पिछले आदेश को देखते हुए, हम अभी जमानत नहीं दे सकते। यह तीसरी बार है जब हाई कोर्ट ने खालिद और इमाम की जमानत याचिका खारिज की है।

जस्टिस प्रतिभा एम. सिंह और जस्टिस दिनेश भट्ट की डिवीजन बेंच ने आदेश दिया, तस्लीम अहमद और खालिद सैफ की भूमिका उमर खालिद और शरजील इमाम से अलग है, इसलिए समानता का दावा नहीं किया जा सकता... जहाँ तक नॉर्थ-ईस्ट दिल्ली दंगों का



सवाल है, इसी FIR से जुड़े एक दूसरे मामले अथर खान बनाम दिल्ली राज्य में इस कोर्ट ने अथर खान की भूमिका की जांच की थी और इस आधार पर उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी कि अथर खान की भूमिका... इस फैसले के पैरा 62, 63 और 64 में बताई गई शर्तों के अनुसार थी। ऊपर की चर्चा और इन दोनों मामलों के सभी तथ्यों को देखते हुए, खासकर गुलफिशा फातिमा मामले में इन्होंने दो अपीलकर्ताओं के लिए पैरा 432 में लगाई गई शर्तों को ध्यान में रखते हुए, यह कोर्ट मौजूदा मामले में ट्रायल कोर्ट द्वारा दिए गए फैसले/आदेश में कोई कमी नहीं पाता है। इसलिए, मौजूदा अपीलें खारिज की जाती हैं।